ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

अगस्त-२०१३

अगस्त-2013 ◆ वर्ष 2 ◆ अंक 3 ◆ उदयपुर

जल में थल में और गगन में
फैल रहा है ज्ञान प्रकाश
ऋषिवर तेरी अमर साधना
सुरभित हो रही है आज

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ~~२०~~

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११४
श्रावण शुक्ल प्रथमा
विक्रम संवत्
२०७०
दयानन्दाब्द
१८९

August - 2013

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

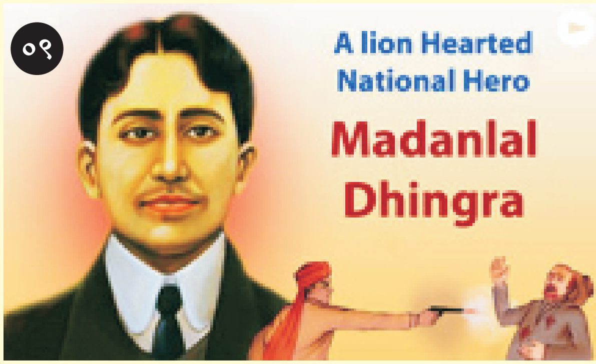

स मा चा र २१

ह ल च ल २२

०४ वेद सुधा
०७ लालच, स्वार्थ और विनाश
११ आचार्य दयानन्दकृत वेदभाष्य की विशेषताएँ
१३ चीन की चुनौती को समझें
१६ लोकतंत्र और नेता
१८ लोक चेतना में स्वाधीनता की लय
२३ नारी का वैदिक व आधुनिक स्वरूप
२५ क्या इसी भारत की कल्पना की थी?
२६ विद्यार्थियों का तपस्यामय जीवन
२८ सांख्यदर्शन के प्रवर्तक कपिल मुनि

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - २ अंक - २

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४ , ९३१४५३५३७९, ९८२८९२९७४७
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

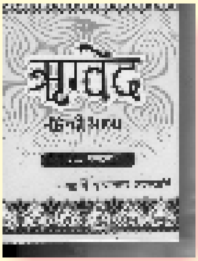

ओ३म्

वेद सुधा

मैं मिट्टी के घर में न रहूँ

मो षु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम्।
मृळा सुक्षत्र मृळय।।१।। अष्टम सूक्त (ऋक्० ७/८९)

अर्थ- हे (राजन्) हमारे राजा (वरुण) हमें दुर्गति से बचानेवाले और वरण करने योग्य परमात्मन्! (अहम्) मैं (मृन्मयम्) मिट्टी से बने हुए (गृहम्) घर में (मा-उ) न (सुगमम्) जाऊँ (मृळ) सुखी कीजिए (सुक्षत्र) हे उत्तमरीति से विपत्ति से बचानेवाले शक्तिशाली भगवन्! (मृळय) मुझे सुखी कीजिए।

सप्तम सूक्त के अन्तिम मन्त्र में भक्त ने भगवान् से प्रार्थना की थी कि हे प्रभो! मुझे सब प्रकार के बन्धनों से मुक्त कीजिए और भाँति-भाँति के कल्याणों द्वारा मेरी रक्षा कीजिए। प्रस्तुत सूक्त में उसी भाव को प्रकारान्तर से और अधिक विस्तृतरूप में प्रकट किया गया है और प्रसङ्ग से आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी कई नई बातों का उपदेश कर दिया गया है। पूर्व सूक्तों में साधक प्रभु की महिमा का अनुभव कर चुका है और उनके विराट्रूप की झाँकी ले चुका है। वह देख चुका है कि प्रभु का पल्ला पकड़ने से मनुष्य का आत्मा कितना ऊँचा उठ सकता है और कैसी आनन्द और मङ्गलमय अवस्था में पहुँच जाता है, इसलिए वह प्रस्तुत सूक्त के मन्त्रों में बार-बार "मुझे सुखी कीजिए, मुझे सुखी कीजिए" की रट लगाकर भगवान् से उसी परमानन्दमयी अवस्था में रखने की प्रार्थना करता है।

भगवान् का साक्षात्कार कर लेने पर जो आनन्द अनुभव होता है, उसकी तुलना में प्रकृति के बने इस संसार से प्राप्त होने वाले सब सुख मिट्टी के सुख हैं, इसलिए इस मन्त्र में भक्त भगवान् से प्रार्थना करता है कि हे प्रभो! मैं मिट्टी के घर में न रहूँ। इस प्राकृतिक जगत् को ही मिट्टी का घर मन्त्र में कहा गया है। यह जगत् और इसके विषय मिट्टी के-जड़ प्रकृति के बने हुए हैं। जब यह जगत् ही मिट्टी का बना हुआ है तब इससे मिलनेवाले सुख भी तो मिट्टी के ही होंगे-निकृष्ट श्रेणी के ही होंगे। जगत् से मिलने वाले सुख मिट्टी के सुख-निकृष्ट श्रेणी के सुख, इसलिए हैं कि वे चिरस्थायी नहीं होते, क्षणिक होते हैं और उनका परिणाम दुःखदायी होता है। उनसे सच्चा सन्तोष, सच्ची तृप्ति, सच्ची शान्ति और सच्चा आनन्द जो सदा स्थिर रहे, प्राप्त नहीं होते। हमें सच्चा सन्तोष, सच्ची तृप्ति, सच्ची शान्ति और सच्चा आनन्द भगवान् से ही प्राप्त होते हैं। भगवान् के साक्षात्कार से हमें जो आनन्द प्राप्त होता है, वह चिरस्थायी होता है और उसका परिणाम दुःखदायी नहीं होता इसलिए वह आनन्द संसार के मिट्टी के सुखों की तुलना में मानो सुवर्ण का सुख है। भक्त अपने प्रभु से सुनहरे, इसी चिरस्थायी और परम पवित्र ब्रह्मानन्द सुख की प्रार्थना कर रहा है। वह कह रहा है-हे महाराज! अपने साक्षात्काररूप सुवर्ण के घर का स्वामी बनाइए।

मन्त्र में "मैं मिट्टी के घर में न जाऊँ" इस वाक्य से संसार को त्यागने की जो भावना सूचित होती है, उससे यह परिणाम नहीं निकालना चाहिए कि हमें इस संसार की सर्वथा ही उपेक्षा कर देनी चाहिए और इससे सम्बन्ध रखने वाले विद्या-विज्ञानों में कोई उन्नति नहीं करनी चाहिए। वेद के इस और ऐसे अन्य उपदेशों का यह अभिप्राय बिल्कुल नहीं है। यदि हम संसार की सर्वथा उपेक्षा कर बैठेंगे तो हमारा जीवन भी नहीं रह सकेगा। हमारी भूख की निवृत्ति नहीं हो सकेगी। सर्दी, गर्मी और वर्षा से हमारी रक्षा नहीं हो सकेगी। भाँति-भाँति के रोग हमें दबोच लेंगे। हम राज्य स्थापित न कर सकेंगे। स्थापित राज्यों की रक्षा न कर सकेंगे और इसलिए शत्रु लोग हमें सदा कष्ट देते रहेंगे और ऐसी अवस्था में अध्यात्मशास्त्र का अध्ययन भी हमारे लिए असम्भव हो जाएगा। यदि हम संसार की सर्वथा उपेक्षा कर दें तो हमें ब्रह्म-ज्ञान भी प्राप्त नहीं हो सकता। जब हम भाँति-भाँति की प्राकृतिक विद्याओं का अध्ययन करते हैं और इनके द्वारा प्रकृति के अद्भुत पदार्थों की सूक्ष्म और बुद्धिमत्ता पूर्ण रचना पर दृष्टिपात करते हैं तभी हमें उनके रचयिता, रक्षक और संचालक परमात्मा का ज्ञान होता है, इसलिए वेद में जहाँ अध्यात्मशास्त्र का उपदेश किया गया है वहाँ राजनीतिशास्त्र, कृषिशास्त्र, आयुर्वेदशास्त्र, पदार्थविज्ञान आदि अनेक प्राकृतिक और सामाजिक विषयों का व्यवहारोपयोगी ज्ञान भी बीजरूप में उपदिष्ट कर दिया गया है, अतः हमें संसार की सर्वथा उपेक्षा न करके इसके विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्ध रखने वाले विद्या-विज्ञानों में भी यथेष्ट उन्नति करनी चाहिए और उनसे जो सुख प्राप्त किया जा सके, उसे प्राप्त कर लेना चाहिए। हमें केवल इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम संसार के विषयों में लिप्त होकर उनमें फँस न जाएँ।

हमें सदा यह स्मरण रखना चाहिए कि हमारे जीवन का लक्ष्य ब्रह्म का साक्षात्कार करना है। संसार के विषय हमारा लक्ष्य नहीं हैं। ये

साधन हैं, साध्य नहीं हैं। साध्य तो ब्रह्म-साक्षात्कार है। जब हम यह स्मरण रखते हुए सांसारिक विषयों का सेवन करेंगे तब हम इनमें लिप्त होकर फँसेंगे नहीं। इनसे केवल आवश्यक उपयोग और सहायता ले-लेंगे। तब ये हमारा अनिष्ट न करके हमें शक्ति देनेवाले बन जाएँगे। यदि एक मक्खी शहद से भरे कटोरे के किनारे पर बैठकर शहद में मुख लगाकर भूख मिटाने और शरीर को पुष्ट करने के लिए जितना आवश्यक है उतना शहद भरके पीले तो यह विषय-सेवन मक्खी का कोई अनिष्ट नहीं करता प्रत्युत उसे लाभ पहुँचाता है, जीवन देता है, परन्तु यदि वह मक्खी लालच और लोभ में भरकर शहद में ही डूबी रहना चाहे और इसलिए किनारे पर न बैठकर शहद में ही कूद पड़े तो वह लथपथ होकर, लिप्त होकर शहद में ही फँस जाएगी। वहाँ से निकल न सकेगी और मर जायेगी। शहदरूप विषय सेवन मक्खी का इष्ट भी कर सकता है और अनिष्ट भी। यदि वह तटस्थ वृत्ति से उसका सेवन करेगी तो उसी में फँसकर मर जायेगी। इसी प्रकार यदि हम संसार के विभिन्न विषयों को केवल साधन समझकर तटस्थ वृत्ति से उनका सेवन करेंगे तो वे हमारा लाभ करेंगे और यदि हम उन्हीं में तन्मय होने की भावना से, उन्हीं को जीवन का लक्ष्य समझकर, उनका सेवन करेंगे तो हम उनमें फँस जाएँगे और कष्ट भोगेंगे। संसार अपने आप में न अच्छा है, न बुरा। हम जिस दृष्टि से उसका सेवन करते हैं, वह उसे अच्छा या बुरा-सुवर्ण का या मिट्टी का बना देती है। हममें से प्रत्येक जीवन का अन्तिम लक्ष्य तो ब्रह्म का साक्षात्कार है। ब्रह्मसाक्षात्कार के मार्ग में चलते हुए संसार के विषयों का सेवन तो केवल साधन के रूप में ही करना है। यदि इस दृष्टि से संसार को देखा जाए तो वह अच्छा हो जाता है- सुवर्ण का हो जाता है और यदि संसार के विषयों का रसपान ही हमारे जीवन का अन्तिम लक्ष्य है, इस दृष्टि से संसार को देखा जाए तो वह कष्ट देने वाला बन जाता है, बुरा हो जाता है- मिट्टी का हो जाता है। मन्त्र में मिट्टी के संसार को त्यागने का उपदेश है, सुवर्ण के संसार को-ब्रह्मसाक्षात्कार के मार्ग में साधन बन रहे संसार को त्यागने का उपदेश नहीं है। ठीक दृष्टि से भोगा हुआ संसार तो बन्धन का कारण न होकर मोक्ष का कारण होता है।

हमारा संसार हमारे लिए मिट्टी का न होकर सुवर्ण का हो जाए इसके लिए हम और किससे प्रार्थना कर सकते हैं? वरणीय प्रभु ही हमें अपने जगत् को सुवर्ण का बनाने में हमारी सहायता कर सकते हैं। इसलिए मन्त्र में प्रार्थना है कि ''हे वरुण प्रभो! मुझे मिट्टी के घर से बचाइए और इस प्रकार हे स्वामिन्! मुझे सुखी कीजिए, आदर्शरूप में सुखी कीजिए''।

भगवान् ''सुक्षत्र'' हैं। क्षत्र का अर्थ घाव से, विपत्ति से रक्षा करनेवाला भी होता है तथा शक्ति और बल भी होता है। भगवान् क्योंकि सब प्रकार के घावों से, सब प्रकार की विपत्तियों से हमारी बहुत अच्छी तरह रक्षा करते हैं, इसलिए वे सुक्षत्र हैं और क्योंकि उनमें बहुत उत्तम शक्ति है, वे बड़े बलशाली हैं, इसलिए भी वे ''सुक्षत्र'' हैं। ''सुक्षत्र'' भगवान् से ही- विपत्तियों से त्राता और शक्ति के पुञ्ज भगवान् से ही तो हम मिट्टी के संसार से बचाने और पूर्ण सुख प्रदान करने की प्रार्थना कर सकते हैं।

हे मेरे आत्मन्! तू भी उस सुक्षत्र प्रभु की शरण में जा और उससे शक्ति पाकर अपने-आपको मिट्टी के घर से बाहर निकलने योग्य बना।

साभार-वरुण की नौका

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा एवं

श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव
कोटा

श्री लोकेश चन्द्र टांक
बैंगलुरु

श्रीमती गायत्री पंवार
जयपुर

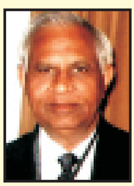

डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता
कोटा

श्री वीरमुखी
लॉग्स आइलैण्ड, अमेरिका

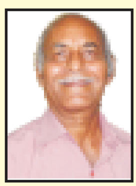

डॉ. अमृतलाल तापड़िया
उदयपुर

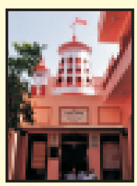

आर्य समाज हिरणमगरी
उदयपुर

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सुन्दर भाव और श्रेष्ठ,
कर्म का है यह इनाम।
प्रफुल्लित रखती प्रगति,
जगत् में होता है नाम॥

सत्यार्थ सौरभ
घर–घर पहुँचावें

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्

।। ओ३म् ।।

श्रीमती गिन्नी देवी शर्मा
के पावन स्मृति में
(1929 - 2013)
सादर श्रद्धाञ्जलि

सिलीगुड़ी आर्य समाज के संस्थापक सदस्य श्री रतिराम शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती गिन्नी देवी शर्मा का ८५ वर्ष की आयु में २८ जून २०१३ को सिलीगुड़ी में निधन हो गया। माता जी के सम्बन्ध में जितना लिखा जाए वह कम ही है। 'माता निर्माता भवति'। माता वही है जो सन्तति का निर्माण करे, सुसंस्कारों से निज सन्तति का जीवन ओत-प्रोत करे। श्रीमती गिन्नी देवी जी आज की शैक्षणिक कसौटी के अधिक सोपान न चढ़ी हों पर सन्तति निर्माण कला में सुदक्ष थीं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आपके बेटे सर्वश्री राजकुमार शर्मा , डा. आनंद कुमार शर्मा, श्री विजय कुमार शर्मा एवं श्री अरुण कुमार शर्मा और बेटियाँ श्रीमती राजबाला, श्रीमती सत्यबाला, श्रीमती भारती एवं श्रीमती यशी हैं जो माताजी द्वारा अति गहनता से प्रविष्ट कराए संस्कारों की सुरभि सर्वत्र प्रसारित कर रहे हैं। हम यहाँ यह भी कहना चाहेंगे कि सहधर्मिणी के रूप में पितृव्य श्री रतिराम शर्मा के सद्संकल्पों को मूर्त्तिमान् करने में निःसन्देह माता जी सद्गुणों से लबालब इस वैदिक गृहस्थी की धुरी थीं। पंचमहायज्ञों का नित्य सम्पादन आपकी ही कर्त्तव्य परायणता का फल था। आर्यसमाज की आज जो दशा व दिशा है ऐसे में कथनी व करनी के एक्यभाव के साथ-साथ ऋषिवर दयानन्द की फुलवारी को सम्पूर्ण पुष्पित व पल्लवित अवस्था में देखना हो तो पं. रतिराम जी शर्मा तथा उनके पुत्र-पुत्रियों के परिवारों को देखलें। सर्वत्र मान्य माता जी की ऋषि-निष्ठा की झलक मिलेगी। सिलीगुड़ी तथा इसके आस पास के क्षेत्र में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में श्रीमती गिन्नी देवी शर्मा ने सर्वदा अपने पति का आगे बढ़ कर साथ दिया । सिलीगुड़ी में महिला आर्यसमाज आरम्भ करने में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा । उनमें संगठन की अपूर्व शक्ति थी । अतिथि सत्कार उनका अभिन्न स्वभाव रहा । उन्हें दूसरों को खिलाने में दैवीय आनंद प्राप्त होता था । यज्ञ उनके जीवन का अविभाज्य अंग रहा। रुग्ण अवस्था में यज्ञ न कर पाने पर भी भोजन यज्ञ के बाद लेने में उनका आग्रह रहा। सिलीगुड़ी आर्यसमाज में दातव्य औषधालय व अन्य यज्ञीय कार्यों हेतु दान देना तथा दूसरों को प्रेरित करना उनका स्वभाव था। उन्हें बहुत से भजन कंठस्थ थे तथा वे अपने सत्संगों में उनका गायन करके दयानन्द के संदेश का प्रचार करती थीं। कर्मठता, लगन, निष्ठा, त्याग, सत्कार उनके स्वभाव के अभिन्न अंग थे। श्री रतिराम शर्मा अपने जीवन का पूरा श्रेय उन्हें समर्पित करतें हैं। आर्यसमाज का प्रचार, गुरुकुलों का संवर्धन हो या सिलीगुड़ी में ब्राह्मण समाज के ऋषि भवन के विस्तार का प्रकल्प, सभी कार्यों में कंधे से कन्धा मिलाकर श्रीमती गिन्नी देवी शर्मा ने अपने पति का सहयोग किया। चार पुत्र और चार पुत्रिओं का भरा पूरा परिवार और चार पीढ़ी का मिलन स्वर्ग के सुख का आनन्द है। श्रीमती गिन्नी देवी शर्मा ने ईश्वर की कृपा से जीवन का सुख पूर्वक यापन किया और अनन्त यात्रा में निकल पड़ीं। उनकी सन्तति दृढ़ता के साथ उनके आदर्शों का अनुकरण कर रही है यह प्रेरणा का विषय है। आपके सुपुत्र श्री विजय शर्मा न्यास के आधार स्तम्भ हैं। 'माँ' की विछोह के इस घड़ी में न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार इस आर्य परिवार के साथ हैं।

आत्म निवेदन

लालच, स्वार्थ और विनाश

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र को पढ़ने से ज्ञात होता है कि उन्होंने गृह-त्याग के पश्चात् के वर्षों में उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में योगियों तथा ज्ञानीजनों की खोज में भ्रमण किया था। उस समय यह यात्रा कितनी कष्टकारी थी, यह ऋषि द्वारा अलकनन्दा पार करने के वर्णन में स्पष्ट होकर हृदय को छू जाती है। तब हिमालय शान्ति ज्ञान और वैराग्य का स्थल था परन्तु आज पिकनिक स्पॉट बन गया है। अभी गत सदी के अंतिम दशक तक भी यह परम्परा थी कि यात्रियों को रात्रि में केदारनाथ रुकने नहीं दिया जाता था। गौरीकुण्ड यात्रियों के लिए अंतिम पड़ाव था। वहाँ से १४ किमी. का उबड़ खाबड़, चढ़ाई वाला मार्ग तय करके यात्री केदारनाथ जाते थे और उसी शाम को लौटकर गौरीकुण्ड वापस आते थे।

धर्म की मार्केटिंग इस युग की विशेषता है। जितने ज्यादा यात्री मंदिर जायेंगे उतना ही अधिक लाभ होगा, होटल मालिकों को, दुकानदारों को, यहाँ तक कि मंदिर के पुजारियों को भी लाभ होगा। अतः केदारनाथ ही नहीं ऐसे सभी स्थलों की विशद् पब्लिसिटी ने इन्हें मीडिया क्रान्ति के साथ धार्मिक स्थल से अधिक 'टूरिस्ट-हब' बना दिया है। मार्केटिंग के प्रभाव के लिए हम पाठकों को स्मरण करायेंगे कि एक समय एक फिल्म आयी थी- 'जय संतोषी माँ।' जिस संतोषी माँ को कोई नहीं जानता था, घर-घर पर केवल और केवल सन्तोषी माता का साम्राज्य हो गया। जिसे देखो शुक्रवार का व्रत कर रहा था। जगह-जगह उद्यापन होने लगे थे। आज मीडिया से सन्तोषी माता गायब हैं तो जनता के बीच में से भी। ऐसा लगता है कि जैसे सन्तोषी माता अस्तित्वहीन हो गई हो। फिर बारी आयी वैष्णोदेवी की। गाना आया-'चलो बुलावा आया है माता ने बुलाया है' अब कोई क्यों माने कि उसे माता ने नहीं बुलाया है, परिणाम वैष्णोदेवी के मंदिर में भक्तों की बढ़ती भीड़।

अब धंधेबाजों के सामने एक समस्या आई। कष्ट सहकर मंदिर-दर्शन की अभिलाषा वाले तो अत्यल्प थे। भीड़ में भारी हिस्सा उनका था जो घूमने फिरने की इच्छा से आते थे। दर्शन लाभ तो मुफ्त की चीज थी। ऐसे लोग सुविधा भोगी थे। ऐसे स्थलों पर माल, स्पा जैसी सुविधाएँ इस धारणा को पुष्ट करती हैं। ये चढ़ाई भरे मार्ग पर नहीं चढ़ सकते थे। इन्हें ढोने हेतु पहले गरीब मनुष्य, फिर खच्चर, फिर कारें/एस.यू.वी./बसें सामने आईं। ऐसे लोग लग्जीरियस यात्रा का आनन्द लें इसलिए ठीक मंदिर तक पहाड़ों के सीने को चीरकर चौड़े मार्ग बनाए गए। इस सबमें लालच व स्वार्थ में अंधे होकर हमने प्रकृति से छेड़छाड़ के फलस्वरूप परिणामी आसन्न विनाश को अनदेखा कर दिया। जिस केदारनाथ के १४ किमी. तक कोई निवास नहीं कर सकता था। आज मंदिर से १०० मीटर दूर होटल बने हुए हैं। यहाँ तक कि मंदिर के पास हैलीपेड बना है। अति विशिष्ठ लोग तथा अति धनाढ्य वर्ग इस सुविधा का प्रयोग करता है। कहा जाता है कि उत्तराखण्ड में इस निमित्त २५ हैलीकॉप्टर कम्पनियाँ आपरेट कर रही हैं। लोगों की इस श्रद्धा के दोहन की दौड़ में अनेक एजेन्सियाँ भागीदार हैं। बिना स्वीकृति के ये होटल कैसे बने यह प्रश्न भ्रष्टतम भारत में बेमानी है। यह स्वार्थ लालच व लोगों की आस्था के दोहन का दुष्परिणाम है कि प्रलयंकारी घटना घटित हुई, हजारों लोग काल के क्रूर गाल में समा गए, कई गाँव ऐसे विनष्ट हो गए जैसे कि वे थे ही नहीं।

धर्म की इस मार्केटिंग का प्रबल प्रमाण है केदारनाथ की यात्रा को चारधाम कहा जाना। सभी जानते हैं कि बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी, द्वारिका तथा रामेश्वर चारधाम कहलाते हैं। ये चार दिशाओं में अवस्थित हैं। व्यक्ति चारधाम का पुण्य लूटना चाहता है पर इस निमित्त उसे या तो अलग अलग समय में चार दिशाओं में जाना पड़ेगा या फिर लम्बे समय का कार्यक्रम बनाना पड़ेगा। आज के समय में इतना समय किसके पास है?अतः एक ही ऐसा स्थान विकसित करने की योजना बनी, जहाँ

एक साथ चारधाम की यात्रा का लाभ मिल गया ऐसा सन्तोष भक्त को मिल सके। अतः उत्तराखण्ड में केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री को 'छोटा चारधाम' कहा जाने लगा। 'छोटा' कब हटा दिया गया पता ही नहीं चला। फलतः २-४ दिनों में चारधाम दर्शन से पुण्य लाभ के आशार्थी भारी संख्या में यहाँ आने लगे । कहते हैं कि इनकी संख्या एक करोड़ से ज्यादा हो जाती है। इन यात्रियों की सुविधाओं के लिए पर्यावरण संरक्षण को ताक में रख इंतजाम किए जाने लगे और किए जा रहे हैं। होटलों का निर्माण, हैलीपैड का निर्माण, चौड़ी-चौड़ी सड़कें, यहाँ तक कि माल तथा स्पा जैसी सुविधाएँ

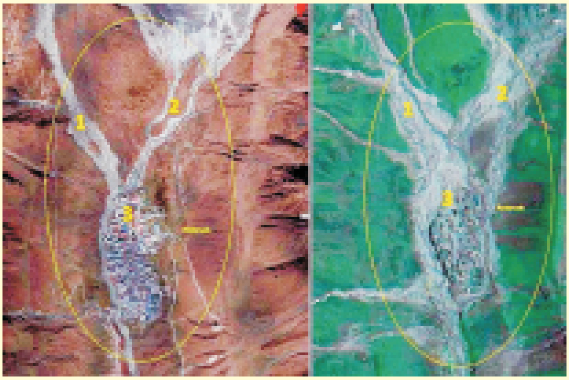

विकसित हुईं। प्रश्न उठता है कि इनका अध्यात्म से क्या संबंध ? उत्तर यही है कि इसके केन्द्र में 'केदार' नहीं टूरिज्म है। ये करोड़ों पर्यटक अपने पीछे भीषण कचरा छोड़कर जाते हैं जो चिन्त्य है।

उधर उत्तराखण्ड में अनेकानेक जल विद्युत परियोजनाएँ प्रारम्भ हैं/ की जा रही हैं। अनेक डैम बन गए अनेक बन रहे हैं। जाने माने अर्थशास्त्री डॉ.भरत झुनझुनवाला का मत है कि उत्तराखण्ड में प्रति मेगावट बिजली परियोजना लगाने हेतु संबंधित मंत्री एक करोड़ ले रहे हैं। इस प्रकार अब तक स्वीकृत ४०००० मेगावट का हिसाब लगाया जा सकता है। बिना विचारे इनकी स्वीकृति जारी हो रही है। एक स्थल पर तो इतनी चौड़ी सुरंग बनाई गई है कि एक साथ तीन ट्रेन उसमें से निकल सकें। इस सब में विस्फोटकों के प्रचुर प्रयोग से पहाड़ खोखले होने ही थे। इन पहाड़ों के अंदर बाहर का पानी रिसने लगा। इससे जहाँ पीने के पानी की कमी हुई वहाँ पहाड़ कमजोर भी हुए। जानकारों का मानना है कि यह ऐसी दुर्घटना है जिसे आज नहीं तो कल घटना ही था। इस क्षेत्र में जिस बेदर्दी से पहाड़ों तथा भूमि का सीना छेदा जा रहा है यह तबाही उसी का ही दुष्परिणाम है।

विकास के हम विरोधी नहीं पर यह देखना ही पड़ेगा कि तथाकथित विकास के चक्कर में प्रकृति से इतनी छेड़छाड़ न करें कि आपदा आ जाए। गत मास हुआ भी वही। अतिक्रमण इस सबके मूल में है। वस्तुतः मन्दाकिनी नदी केदारनाथ मंदिर से पूर्व ही एक बड़े विशाल चट्टानी अवरोध के कारण कई सदियों से दो धाराओं में बहती थी। गत वर्षों में पश्चिमी धारा प्रवाह बन्द हो गया, केवल पूर्वी धारा बहने लगी। अब अतिक्रमणकारियों की बन आई। नदी के उस डूब क्षेत्र में धड़ाधड़ अतिक्रमण हुए, निर्माण हुए।

१७ जून २०१३ को पिछले कुछ दिनों से हो रही बारिश अचानक काफी तेज हो गई। भारीमात्रा में जो भारी अवरोध था वह टूट गया तथा मंदाकिनी पश्चिमी धारा में बह निकली। वहाँ तो अनगिनत निर्माण हो चुके थे। कहते हैं कि पानी अपना रास्ता बना लेता है और मंदाकिनी नदी ने यही किया। फलतः सहस्रों निर्माण तिनके की तरह बह गये तथा प्रलयंकारी विनाश के दृश्य हमारे समक्ष उपस्थित हो गए। वेग का आलम यह था कि कई किलोमीटर दूर ऋषिकेश में गंगा में स्थापित शिव प्रतिमा तक बहाव में बह गई।

अब इस प्रलय के कारणों पर विचार हो रहा है। ऐसा लगता है कि प्रकृति के इस ताण्डव के पश्चात् भी हमें अक्ल नहीं आई है। कोई कह रहा है कि यह धारी देवी का प्रकोप है। जिस दिन उसकी प्रतिमा विस्थापित की गई उसी दिन यह प्रलय हुई। एक कारण यह भी बताया जा रहा है कि केदारनाथ मंदिर के कपाट शुभ मुहूर्त में नहीं खोले गए। अगर हम इस दुःखद त्रासदी के अवसर पर उपरोक्त मूर्खतापूर्ण वक्तव्यों पर टिप्पणी करेंगे तो उचित नहीं होगा। ऐसे में एक पर्यावरणविद् ने एक टीवी चैनल पर ठीक ही कहा है कि 'मनुष्य ने मन्दाकिनी के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। प्रशासन ने इस कार्य को रोकना था, उसको सही करना था, नहीं किया तो मंदाकिनी ने स्वयं अपना रास्ता बना लिया।' अतः इस प्रलयंकारी विनाश के लिए अगर कोई जिम्मेदार है तो वह है मनुष्य का लालच और स्वार्थ। अगर अब भी सबक न लिया तो और भी ज्यादा खतरनाक परिणाम सामने आ सकते हैं।

- अशोक आर्य
०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

पुण्य तिथि पर विशेष

राजभक्त परिवार में विद्रोह का प्रस्फुटन

मदन लाल धींगरा

मदन लाल धींगरा संभवतः पहले भारतीय स्वतंत्रता सैनानी थे जिनको कि ब्रिटिश भूमि पर मृत्युदण्ड दिया गया। उनका बलिदान लन्दन में १७ अगस्त १९०९ में हुआ। मदन लाल का जन्म १८ फरवरी १८८३ को अमृतसर के एक अत्यन्त ही धनाढ्य परिवार में हुआ। उनके पिता दित्तामल एक अवकाश प्राप्त सिविल सर्जन थे। इनके कटरा शेर सिंह में २१ घर थे और जीटी रोड पर ६ बंगले थे। अमृतसर के यह पहले भारतीय थे जिनकी कार अमृतसर की सड़कों पर फर्राटे मारती थी। इनको ब्रिटिश सरकार ने राय साहब की पदवी दे रखी थी। पूरा परिवार राजभक्त था। पाठकों को आश्चर्य होगा कि जिस अंग्रेज अफसर कर्जन वायली को मदन लाल धींगरा ने मारा, वह इनके परिवार का मित्र था तथा जब मदन लाल लन्दन में थे तब वायली को इनका ध्यान रखने के लिए इनके भाई ने पत्र लिखा था। इनके छः भाई तथा एक बहिन थे। जिनमें से तीन बेटे डॉक्टर तथा तीन बैरिस्टर थे। ऐसे धनाढ्य परिवार में इस विद्रोही स्वभाव के पुत्र का जन्म हुआ। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा व वीर सावरकर से धींगरा अत्यन्त प्रभावित थे। पाठकों को यह भी ज्ञात होगा कि श्याम जी कृष्ण वर्मा द्वारा दी गई छात्रवृत्ति पर ही वीर सावरकर १९०६ में इंग्लैण्ड पहुँचे थे। इसी साल धींगरा भी इंग्लैण्ड पहुँचे थे। सावरकर और मदन लाल धींगरा एक ही आयु के थे। उसी समय में श्याम जी कृष्ण वर्मा को इंग्लैण्ड छोड़कर पैरिस जाना पड़ गया क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने इनका उत्पीड़न आरम्भ कर दिया था। इस समय में धींगरा व सावरकर को और नजदीक आने का मौका मिला। धींगरा की मृत्यु के ३१ वर्ष पश्चात् ऊधम सिंह ने इनका ही रास्ता अपनाते हुए लगभग ऐसी ही परिस्थितियों में ३१ जुलाई १९४० को बलिदान दिया।

मदन लाल ने पीबीएन स्कूल अमृतसर से १२वीं कक्षा उत्तीर्ण की। राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने की वजह से पिता ने इन्हें घर से बाहर निकाल दिया व ये सड़क पर आ गए परन्तु इन्होंने अपनी गतिविधियों को विराम नहीं दिया। इनको क्लर्क का जोब मिला पर वहाँ से भी इनको निकाल दिया क्योंकि इन्होंने कर्मचारी संघ बनाने का प्रयत्न किया। बाद में कालका में इनको एक तांगा कम्पनी में तांगे वाले की तरह काम करने का अवसर मिला। ये उस समय कालका शिमला रोड पर तांगा चलाते थे। कठिन सड़कों पर तेजी के साथ तांगा चलाने के कारण ये बहुत लोकप्रिय हो गए। इसके बाद इन्होंने लन्दन जाने का निश्चय किया। लन्दन के लिए टिकट खरीदने के लिए इन्होंने बॉम्बे फोर्ट पर काम किया तब वे लन्दन गए पर वहाँ इन्हें कोई सफलता नहीं मिली और वे भारत आ गए। भाई इन्हें वापस घर पर लेकर आये व परिवार ने इनको वापस स्वीकार किया। पिता ने इनको फिर लन्दन अभियांत्रिकी की पढ़ाई करने के लिए भेजा और ये १९०६ में लन्दन आये। १९ अक्टूबर १९०६ को यूनिवर्सिटी कॉलेज, लन्दन में इन्होंने दाखिला लिया। उस समय महर्षि दयानन्द के शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित 'इंडिया हाउस' राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ था। वहाँ धींगरा व सावरकर सम्पर्क में आये। सावरकर की प्रेरणा से १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पचास वर्ष पूरे होने का जश्न लन्दन में मनाया गया। जिसका बिल्ला लगाए हुए धींगरा अपने कॉलेज चले गए। जब एक अंग्रेज ने यह बिल्ला देखा तो उसने छीनना चाहा तब धींगरा एक चाकू लेकर उसके पीछे भागे। यह घटना मदन लाल की निडर प्रवृत्ति की परिचायक है। ११ अगस्त १९०८ को खुदीराम बोस और उसके पश्चात् कन्हैयालाल दत्त और सत्येन्द्र बोस को फाँसी दी गई। धींगरा उसी समय बदला लेने के लिए उतावले हो गए। उस समय उन्होंने सावरकर को कहा कि मातृभूमि

कर्जन वायली का स्मारक

के लिए मर मिटने का यह बिल्कुल सही समय है। जिसके उत्तर में सावरकर ने कहा कि 'इफ यू आर रेडी फोर द हाइएस्ट सेक्रिफाइज एंड यूअर माइण्ड हेज थिंक एबाउट फाइनल इमेन्सपियेशन दैन डिफिनेटली दिस इज द राइट टाइम टू डाई फोर नेशन'। इसके पश्चात् ही लन्दन में रह रहे हिन्दुस्तानी छात्रों को तंग करने वाले कर्जन वाइली को धींगरा ने मारा। इसके लिए धींगरा ने बकायदा लाइसेन्सी रिवाल्वर ली व राइफल शूटिंग क्लास में प्रवेश लिया। बहुत शीघ्र १८ फीट राइफल शूटिंग में मदन लाल प्रवीण हो गए। लन्दन स्थित एक संगठन ने 'राष्ट्रीय भारतीय सभा' की प्रथम वर्षगाँठ १ जुलाई १९०९ को मनाई जिसमें कि धींगरा भी शामिल हुए। कर्जन वाइली उस सभा का कोषाध्यक्ष था। वस्तुतः मदन लाल धींगरा बंगाल विभाजन के मुख्य अभियुक्त भारत के पूर्व गर्वनर जनरल वायसराय कर्जन और इस कर्जन वाइली दोनों को मारना चाहते थे परन्तु दुर्भाग्यवश ऐसा न हो सका क्योंकि लार्ड कर्जन वहाँ आये नहीं। मदन लाल ने तभी निश्चय करके रात्रि ११ बजे के करीब जबकि सब अपने घर वापस जा रहे थे, कर्जन वाइली भी गेट की तरफ बढ़ रहा था उसके नजदीक आकर के गोली मार दी। वाइली के गिरने के बाद भी धींगरा ने उसे दो गोलियाँ और मारीं। १७ अगस्त १९०९ को धींगरा को फाँसी दे दी गई। उस समय उनकी अवस्था केवल २५ वर्ष थी। दाह संस्कार के लिए उनका पार्थिव शरीर उनके परिवार को नहीं दिया गया। ये पहले क्रान्तिकारी थे जिन्होंने बहुत बड़े ओहदे पर आसीन अंग्रेज अफसर को उन्हीं के घर में अर्थात् लन्दन में गोली मारी। धींगरा को गिरफ्तार करने वाली पुलिस ने लाख प्रयास कर लिए परन्तु धींगरा के मुँह से अन्य किसी साथी अथवा देशभक्त का नाम नहीं उगलवा पाये। जहाँ तक न्याय की बात है सारा मुकदमा एक ही सुनवाई में समाप्त हो गया क्योंकि उन्होंने अपने लिए कोई वकील करने से इंकार कर दिया। अपने अन्तिम वक्तव्य में उन्होंने कहा कि 'आई एडमिट, द अदर डे, आई अटेमटेड टू शूट इंग्लिश ब्लड एज ए हम्बल रिवेन्ज फोर द इन ह्यूमन हैंगिग एंड ट्रान्सपोर्टेशन ऑफ पेट्रीयोटिक इंडियन यूथ। ऐज ऐ हिन्दू आई फेल्ड देट ए रोन्ग ।

संकलन-नवनीत आर्य
नवलखा महल, गुलाबबाग

न्यास द्वारा समस्त संस्कारों हेतु समुचित व्यवस्था

जीवन में उदात्त नैतिक मूल्य स्वयमेव स्थापित नहीं होते, भागीरथ प्रयत्न करना होता है। भारतीय मनीषा ने इस हेतु १६ संस्कारों का विधान किया है। जो प्रत्येक गृहस्थ को करवाने चाहिए। कई सज्जनों को लगता है कि यह कठिन तथा व्यय-साध्य कार्य है। हमारा निवेदन है कि ऐसा कुछ नहीं है। संस्कार चित्त-प्रसाद-अभिवृद्धि का हेतु है। आप केवल दूरभाष पर अपनी अभिलाषा बतावें। न्यास के पुरोहित पंडित नवनीत आर्य सारा कार्य, स्वतः व्यवस्था कर सुन्दरता से सम्पन्न करायेंगे।

दूरभाष : ०२९४-२४१७६९४, चलभाष ०९३१४५३५३७९
कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379
प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

आचार्य दयानन्दकृत वेदभाष्य की विशेषताएँ

- पंडित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

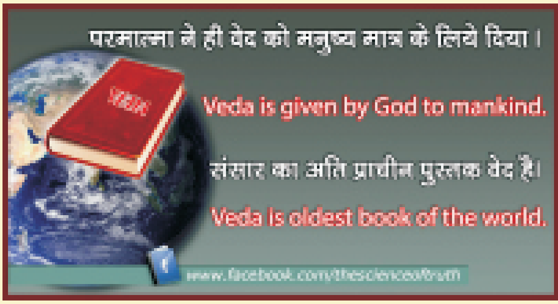

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की विशेषताओं को अति संक्षेप में हम यहाँ दर्शाते हैं, पाठक विशेष तो उनके भाष्य को पढ़कर स्वयं देखें।

१ ईश्वर में पूर्ण विश्वासी,पूर्ण योगाभ्यासी साक्षात्कृतधर्मा तपस्वी, पक्षपात रहित-ईश्वर के सच्चिदानन्द सर्वत्र सृष्टिकर्ता आदि गुणों के प्रतिपादक, प्राचीन ऋषि मुनियों में पूर्ण निष्ठावान, ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त ऋषियों के सिद्धान्तों को मानने वाले महापुरुष, आचार्य दयानन्द सरस्वती द्वारा इस भाष्य का निर्माण हुआ (जितना भी वह प्राप्त है)।

२ विकासवाद के सिद्धान्त का खण्डन जहाँ ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से होता है, वैसा ही उनके वेदभाष्य से भी पदे पदे होता है।

३ वेद अपौरुषेय (ईश्वरीय ज्ञान) वाद की धारणा पर यह भाष्य है, इसके विरुद्ध इसमें यत्किंचित भी नहीं मिलेगा।

४ यास्क पाणिनि-पतंजलि तथा उनसे भी पूर्ववर्ती ऋषि मुनि आचार्यों के आधार पर वेद के शब्दों को लौकिक शब्दों से भिन्न मानकर भाष्य किया गया है।

५ वेद के सब शब्दों को धातुज मानकर उनकी व्युत्पत्ति-निर्वचन साधार सप्रमाण दर्शाया गया है, निर्वचन भेद से वैदिक शब्दों के अर्थ इस भाष्य में भिन्न भिन्न दर्शाये गये हैं, यौगिक और योगरूढ़िवाद इस भाष्य की आधार शिला है।

६ सब मंत्रों के अर्थ (सायणाचार्य से भी ६०० वर्ष पूर्व) त्रिविधप्रक्रिया अर्थात् सब मंत्रों के अर्थ आध्यात्मिक, आधिदैविक और अधियाज्ञिक प्रक्रियाओं में होते हैं, इस सिद्धान्त के प्रसिद्ध आधार पर किए गए हैं।

७ वेद मंत्रों के अर्थ वेदमंत्रों के आधार पर भी किए गए हैं। (यथा य.१।१३)

८ अग्नि-वायु-इन्द्र-मित्र-वरुण-यम-रुद्र आदि शब्द केवल भौतिक अग्नि-वायु आदि के ही बोधक वाचक नहीं, अपितु 'अग्नि' शब्द के निर्वचन के आधार पर आध्यात्मिक -आधिदैविक प्रक्रिया में परमेश्वर, विद्वान्-राजा-सभाध्यक्ष नेता, विद्युत, प्रकाश तथा जाठराग्नि आदि के भी ग्राहक हैं। अग्नि-वायु आदि शब्द जहाँ भौतिक पदार्थों के वाचक हैं, वहाँ मुख्यवृत्ति (अभिधावृत्ति) से ईश्वर के वाची हैं, यह प्रक्रिया सम्पूर्ण भाष्य में मिलेगी। इसी को आधार मानकर स्वर्गीय महात्मा श्री अरविन्द ने दयानन्द भाष्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की, और इसी बात के आधार पर वेद सम्बन्ध में गंभीर विवेचनायें कीं।

९ सब वेद मंत्रों के षड्जादि स्वर लिखे,जो किसी भाष्य में भी नहीं मिलते। काव्य के अंगभूत श्लेषादि अलंकारों का उपयोग इस वैदिक भाष्य में सर्वप्रथम आचार्य दयानन्द ने ही किया है, और इन अलंकारों के द्वारा अर्थों में बहुविध वैचित्र्य दर्शाया गया है।

१० वेद में अनित्य इतिहास(व्यक्तिविशेषों का इतिहास) कहीं नहीं माना, अपितु ऐसे स्थलों पर बड़ी सुन्दर सप्रमाण व्याख्या की गई है।

११ पदपाठ के विषय में महाभाष्यकार पतंजलि मुनि के सिद्धान्त कि- न लक्षणेन पदकारा अनुवर्त्याः पदकारैर्नाम लक्षणमनुवर्त्यम् (महाभाष्य) के आधार पर तथा आचार्य स्कन्द स्वामी के समान 'तस्मादवग्रहोऽनवग्रहः' के अनुसार ऋषि दयानन्द ने कई स्थलों पर भिन्न पदपाठ माना है,जो शास्त्रसम्मत है।

१२ स्वामी दयानन्द सरस्वती के भाष्य से 'बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे (वै.६।१।१) अर्थात् वेद में कोई बात तर्क के विरुद्ध नहीं' इस सिद्धान्त के आधार पर वेदार्थ किया गया है।

१३ देवतावाद के विषय में सर्वानुक्रमणी और वृहद्देवता आदि से भिन्न भी मंत्रों के देवता माने जा सकते हैं, यह सिद्धान्त शास्त्रसम्मत है, इस विचारधारा के अनुसार स्वामी दयानन्द सरस्वती का भाष्य देखना चाहिए।

१४ मंत्रों के छन्द भी अनुक्रमणी में कहे छन्दों से कहीं कहीं सप्रमाण होने से भिन्न माने हैं।।

१५ 'व्यत्ययो बहुलम्' का सिद्धान्त वेदार्थ में परमावश्यक है। यह बात आचार्य दयानन्द के भाष्य में ही सब से उत्तम रीति से मिलेगी।

१६ 'वाक्यं हि वक्तुरधीनं' के अनुसार वेदार्थ इस भाष्य में मिलेगा।

१७ 'यज्ञ' शब्द से आचार्य दयानन्द ने त्रिविध यज्ञ का ग्रहण किया है। जहाँ पर श्री सायणाचार्य ने केवल भौतिक

यज्ञ परक ही माना है, इतने से ही वेदार्थ कहीं का कहीं पहुँचा दिखाई देने लगता है।

१८ वेद सर्वतंत्र-सार्वभौमिक सिद्धान्तों का प्रतिपादक है,यह बात इसी भाष्य के वेदार्थ से मिलेगी।

१९ दयानन्द भाष्य में नैरुक्त शैली के आधार पर अनेक शब्दों के निर्वचन मिलते हैं, जिनके निर्वचन निरुक्त और ब्राह्मणादि ग्रन्थों में भी उपलब्ध नहीं होते, जो सप्रमाण हैं।

२० सबसे बड़ी और अन्तिम विशेषता दयानन्द भाष्य की यह है कि उसमें नैरुक्तशैली के अनुसार संस्कृत पदार्थ मंत्रगत पदों के क्रम में रखा गया है। और उसमें यत्र तत्र मंत्रों के तीनों प्रकार के अर्थों को लक्ष्य में रखकर निर्वचन तथा अर्थ दर्शाया गया है,जो अन्वय में नहीं हो सकता था। अन्वय को संस्कृतपदार्थ का एक अंश समझना चाहिए और इस संस्कृत अन्वय का ही भाषार्थ किया गया है, जो भाषार्थ करने वालों से ठीक-ठीक पूरा हो भी नहीं सका। इस भाष्य की इस विशेषता को न समझकर बहुत से सज्जन घबराने लगते हैं। एक बार इसका प्रकार समझ लेने से कोई कठिनाई नहीं रहती। यह बात बहुत ही आवश्यक है।

जितना भी कोई विद्वान् विद्या के भिन्न भिन्न अंगों का ज्ञाता, तथा योगादि दिव्यशक्ति सम्पन्न होगा, उतना ही उसे वेदार्थ का भान अधिक उत्तम रीति से होगा।

यह बात हम अपने शब्दों में न रखकर नैरुक्त आचार्य दुर्ग के शब्दों मे रखते हैं। उनका वचन निम्न प्रकार है-

'नह्येतेष्वर्थस्येयत्तावधारणमस्ति। महार्था ह्येयते दुष्परिज्ञानाश्च... एवमेते वक्तृवैशिष्यात् साधून् साधुतरांश्चार्थान् स्रवन्ति।'

अर्थात् 'इन वेद के शब्दों' में इयत्ता(सीमा की समाप्ति) नहीं क्योंकि ये शब्द महान् अर्थों वाले हैं और इन का परिज्ञान सहज नहीं.... इस प्रकार से वैदिक शब्द वक्ता के योग्य-योग्यतर और योग्यतम होने पर साधारण, मध्यम और उत्तम कोटि के अर्थों का प्रतिपादन करते हैं।

हम समझते हैं वेदार्थ विषय का यह सिद्धान्त सर्वोपरि सिद्धान्त है और अत्यन्त उपादेय है।

('वेदार्थ प्रक्रिया के मूलभूत सिद्धान्त' से साभार)

BANANA

HEALTH

Bananas contain three natural sugars - sucrose, fructose and glucose combined with fiber. A banana gives an instant, sustained and substantial boost of energy.

Research has proven that just two bananas provide enough energy for a strenuous 90-minute workout. No wonder the banana is the number one fruit with the world's leading athletes.

But energy isn't the only way a banana can help us keep fit. It can also help overcome or prevent a substantial number of illnesses and conditions, making it a must to add to our daily diet.

Anemia: High in iron, bananas can stimulate the production of hemoglobin in the blood and so helps in cases of anemia.

Blood Pressure: This unique tropical fruit is extremely high in potassium yet low in salt, making it perfect to beat blood pressure. So much so, the **US Food and Drug Administration** has just allowed the banana industry to make official claims for the fruit's ability to reduce the risk of blood pressure and stroke.

Brain Power: 200 students at a Twickenham (Middlesex) school (England) were helped through their exams this year by eating bananas at breakfast, break, and lunch in a bid to boost their brain power. Research has shown that the potassium-packed fruit can assist learning by making pupils more alert.

Constipation: High in fiber, including bananas in the diet can help restore normal bowel action, helping to overcome the problem without resorting to laxatives.

Heartburn: Bananas have a natural antacid effect in the body, so if you suffer from heartburn, try eating a banana for soothing relief.

Stress: Potassium is a vital mineral, which helps normalize the heartbeat, sends oxygen to the brain and regulates your body's water balance. When we are stressed, our metabolic rate rises, thereby reducing our potassium levels.. These can be rebalanced with the help of a high-potassium banana snack.

चीन की चुनौती को समझें
और चीनी माल का पूर्ण बहिष्कार करें

चीन ने १९६२ में आक्रमण करके भारत की ३८००० वर्ग किलोमीटर भूमि अधिग्रहीत कर ली थी। इसके अतिरिक्त जो पाक अधिकृत कश्मीर है उसमें से ५१८३ वर्ग किलोमीटर भूमि पाकिस्तान ने १९६३ में चीन को और दे दी थी। उस भूमि के अन्तरण के परिणामस्वरूप ही पाकिस्तान एवं चीन के बीच काराकोरम हाइवे निकालना संभव हुआ। भारत का इतना बड़ा भूभाग उसके कब्जे में होने के उपरांत भी, अभी २००७ में भारत में चीन के राजदूत ने यह वक्तव्य दे दिया कि भारत ने चीन की ९०००० वर्ग किलोमीटर भूमि पर कब्जा कर रखा है। इस बात को हमारे तत्कालीन विदेश मंत्री प्रणव मुखर्जी ने भी २८ फरवरी २००८ को स्वीकार किया था कि चीन इस बात का दावा करता रहा है कि भारत ने उसकी ९०००० किलोमीटर भूमि पर कब्जा कर रखा है।

अरुणाचल प्रदेश में हेलीपेड बनाया

इस आरोप के साथ ही सीमा पर अब धीरे धीरे वह अपनी सीमा चौकियों को क्रमशः आगे बढ़ाता चला आ रहा है। अरुणाचल प्रदेश में तो उसने भारतीय क्षेत्र में एक स्थान पर हैलीपैड भी बना लिया। अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम व लेह लद्दाख क्षेत्र में भारतीय चरवाहे व किसान तथा अन्य स्थानीय ग्रामीण भारतीय सीमा में जहाँ तक जाते थे, उनका वहाँ तक जाना भी चीन अवरुद्ध कर रहा है। उसके मोटर साइकिल सवार सैन्य अधिकारी आते हैं, और ग्रामीणों को धमका कर चले जाते हैं। इसलिए हमारी सीमा के अन्दर ग्रामीण जहाँ तक जाते रहे हैं वहाँ पर उनका जाना कम हो गया है। इसके साथ ही जैसा हम सबने समाचार पत्रों में पढ़ा है कि लेह लद्दाख क्षेत्र व अरुणाचल प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर जो हमारी सड़कों का काम चल रहा था, वहाँ भी उसने दबाव बनाकर काम रुकवा दिया है। लेह लद्दाख क्षेत्र में पेगाँगत्से नामक झील जिसका ४० प्रतिशत भाग भारत का व ६० प्रतिशत भाग चीन का है आजकल वहाँ उसने पूरी झील में अपनी सैनिक गश्त शुरू कर दी है।

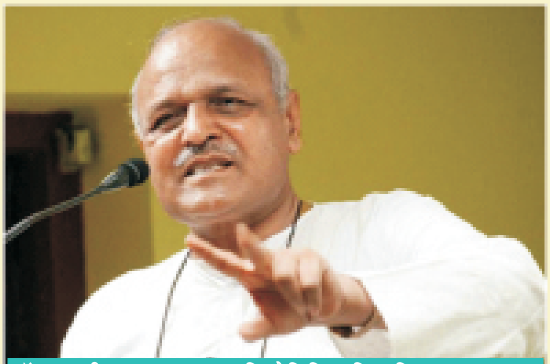

डॉ. भगवती प्रकाश, उप कुलपति, पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर

चीन हमारे अन्य पड़ौसी देशों के साथ सैन्य सम्बन्ध बनाकर बाहर से भी भारत के चारों ओर से घेराबंदी जैसा अभियान चला रहा है। भारत की पाक अधिकृत कश्मीर की भूमि से ५१८३ वर्ग किमी. भूमि जो पाकिस्तान ने चीन को १९६३ में दी थी व जहाँ से काराकोरम हाइवे निकला था उसी हाइवे पर पाकिस्तान ने चीन को अभी तीन लिंक सड़कें दी हैं। इसी के साथ चीन ने पाकिस्तान बलूचिस्तान में, ग्वादर के बन्दरगाह पर अपना नौ सैनिक अड्डा विकसित किया है। इसके परिणामस्वरूप अब फारस की खाड़ी, जहाँ से सम्पूर्ण विश्व को तेल की आपूर्ति होती है, वहाँ पर और अरब सागर में चीनी नौ सेना की उपस्थिति व गतिविधियाँ बढ़ रही हैं। हिन्द महासागर में भी उसकी नौ सेना ने पैर पसारने शुरू कर दिए हैं। दूसरी ओर पूर्वी तट की ओर दृष्टिपात करें तो म्याँमार या बर्मा अर्थात् ब्रह्मदेश के पूरे नदी परिवहन तंत्र को चीनी नौ सेना ने अधिगृहीत कर रखा है और म्याँमार के कोको द्वीप पर चीन ने अपना राडार भी स्थापित कर लिया है। वहाँ से वह भारत के सम्पूर्ण पूर्वी तट और वहाँ के सैन्य प्रतिष्ठानों पर निगरानी कर सकेगा। इसके साथ ही उसने नेपाल में माओवाद के माध्यम से जिस प्रकार अपना वर्चस्व बढ़ाया है उससे एक प्रकार से वहाँ की संपूर्ण राजनीति का सूत्रधार ही चीन बन गया है। भारत में भी लगभग १५० जिलों में वे इसी प्रकार का माओवादी जाल बिछा रहे हैं। मणिपुर में तो माओवादियों व अन्य अलगाववादियों को प्रशिक्षण देने के लिए चीन प्रशिक्षण केन्द्र भी चलाता रहा है। भूटान में भी आजकल चीन का प्रभाव बढ़ रहा है। बांग्लादेश में भी उसने चटगाँव बन्दरगाह पर अपनी नौसैनिक

उपस्थिति बढ़ा ली है एवं वहाँ से भी वह हमारे सम्पूर्ण पूर्वी तट पर उसके नौसैनिक प्रतिष्ठानों पर निगरानी कर रहा है और नौ सैनिक दबाव बढ़ाता रहा है। श्रीलंका में तमिलों के दमन हेतु सारे छोटे हथियार और सैन्य विशेषज्ञ चीन ने उपलब्ध कराये थे और आज भी बड़ी संख्या में चीनी सैन्य विशेषज्ञ श्रीलंका में विद्यमान हैं। एक प्रकार से पाकिस्तान से लेकर नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्याँमार और श्रीलंका तक भारत के चारों ओर उसने संरक्षक और संरक्षित यानि अभिभावक और संरक्षित जैसे सम्बन्ध सभी देशों के साथ रखे हैं।

कूटनीतिक युद्ध

वह पाकिस्तान को शस्त्रास्त्रों से सज्जित कर रहा है। इसके साथ ही वह कहीं भी मौका मिलता है भारत के विरुद्ध कूटनीतिक युद्ध छेड़ने का कोई भी अवसर नहीं गंवाता है। जैश-ए-मोहम्मद नामके आतंकवादी गिरोह का सरगना व लश्कर का आतंककारी 'मौलाना मसूद अजहर' है, जिसे पाँच आतंककारियों के साथ कंधार ले जाकर तत्कालीन भारत सरकार ने छोड़ा था। उसको जब अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी घोषित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का प्रस्ताव गया तो चीन ने उसका विरोध किया और वह प्रस्ताव पारित नहीं हो सका। मौलाना मसूद अजहर में उसकी कोई रुचि नहीं थी लेकिन उसे भारत को आहत करना था इसलिए आजकल विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत को आहत करने की कूटनीति तथा सीमा पर दबाव बनाकर वह भारत-चीन सम्बन्धों में तनाव बढ़ाता ही जा रहा है।

देश के अंदर अनेक संवेदनशील स्थलों पर अपना जाल फैलाने की दृष्टि से चीनी कम्पनियाँ हमारे अति संवेदनशील प्रतिष्ठानों के निकट अत्यन्त अल्प लागत पर परियोजनाएँ हथिया रही हैं। हमारे पूर्व नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर ने तो अनेक ऐसी परियोजनाएँ इंगित की थीं जहाँ पर कोई अति संवेदनशील प्रतिष्ठान होने के कारण चीन ने वह ठेका बहुत अल्प लागत पर लेने के टेण्डर भरे थे। दूसरी ओर उन्होंने बहुत सारी ऐसी परियोजनाएँ भी इंगित कीं जहाँ उन चीनी कम्पनियों को पर्याप्त लाभ होना था, फिर भी चीनियों ने वहां के टेण्डर नहीं भरे क्योंकि वहाँ आसपास हमारा कोई भी संवेदनशील प्रतिष्ठान नहीं था। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र में वेतरणा बाँध का टेण्डर बहुत सस्ते दाम पर इसलिए भरा गया कि वहाँ पर पास में हमारे मिग लडाकू विमान की ऐसेम्बली का केन्द्र है, भाभा एटोमिक रिसर्च सेन्टर है, और पास में हमारा देवलाली तोपखाना केन्द्र (आर्टिलियरी सेन्टर) भी है। इसी प्रकार कावेरी-गोदावरी बेसिन में सीजमिक सर्वे का टेण्डर उसने इतनी सस्ती दर पर इसलिए भरा ताकि वह वहाँ से हमारे नौसैनिक प्रतिष्ठानों की निगरानी कर सके।

ब्रह्मपुत्र को बाँधा

तवांग जिला अत्यन्त संवेदनशील स्थान है,जहाँ एक तरफ भूटान की सीमा लगती है, दूसरी तरफ तिब्बत की सीमा लगती है जो चीन ने अधिगृहीत कर रखा है।

और तीसरी तरफ भारत की सीमा में वह स्थित है। चीन उसको अपने कब्जे में लेना चाहता है। ब्रह्मपुत्र नदी को भी अवरुद्ध करने के लिए उसने बाँध बनाने शुरू कर दिए हैं। उन बाँधों से उसने टनल पाइप लाइनों और नहरों का निर्माण शुरू कर दिया है। भारत सरकार कह रही है कि ऐसा कुछ नहीं है, हमें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है और चीन ब्रह्मपुत्र नदी को मोड़ने का कोई विशेष प्रयत्न नहीं कर रहा है। लेकिन उपग्रहों के चित्रों,अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षकों, अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं व चीनी समाचार पत्रों के अनुसार वहाँ व्यापक स्तर पर निर्माण कार्य चल रहे हैं। इसलिए हमको इस विवाद को अन्तर्राष्ट्रीय नदी जल विवाद के रूप में उठाना चाहिए। ब्रह्मपुत्र का जल अवरुद्ध होने से बांग्लादेश भी प्रभावित होगा। इसलिए हमें उसे भी साथ लेना चाहिए। चीन को इस बात के लिए बाध्य करना चाहिए कि वह ब्रह्मपुत्र के जल को मोड़े नहीं अन्यथा अरुणाचल प्रदेश और आसाम सूखे क्षेत्रों में बदल जायेंगे। ब्रह्मपुत्र नदी में सवा लाख क्यूबिक फीट पानी प्रति सैकण्ड बहता है, ग्लेशियरों का एकदम विशुद्ध जल। बाढ़ के समय तो १० लाख क्यूबिक फीट पानी उसमें प्रति सैकण्ड बहता है। ब्रह्मपुत्र को मोड़ देने

से सारी जलराशि हमको मिलनी बन्द हो जायेगी और स्थिति यह हो जायेगी कि ब्रह्मपुत्र मौसमी नाले में बदल सकती है। {ल्हासा से ३०० कि.मी. दक्षिण पूर्व में.....शातान प्रीफेक्चर में चीन १.१८ बिलियन डालर की लागत से हाइड्रो पावर स्टेशन बना रहा है।(स्त्रोत 2 point 6 billion.com) (तिब्बत में ब्रह्मपुत्र यार्लोन्ग सांगपो के नाम से जानी जाती है। इस नदी पर जांग्मू हाइड्रो इलेक्ट्रीकल परियोजना के अन्तर्गत संभवतः विश्व का सबसे बड़ा बाँध बनाया जा रहा है। (स्त्रोत जी न्यूज)} -संपादक

असीमित व्यापार सुविधाएँ

सर्वाधिक आश्चर्यजनक बात तो यह है कि जो देश भारत पर इस सीमा तक दबाव बना रहा है,आज उसी देश को हम अपरिमित व्यापार सुविधाएँ देते चले जा रहे हैं। आज देश में चाहे रिलायन्स का पावर प्लान्ट लग रहा हो, या अन्य किसी का पावर प्लान्ट लग रहो हो,चाहे बीएसएनएल का टेलीफोन एक्सचेन्ज लग रहा हो, या अन्य किसी कम्पनी एयरटेल का टेलीफोन एक्सचेन्ज लग रहा हो, करीब ३५ प्रतिशत पावर प्लान्ट व टेलीफोन एक्सचेन्ज चीनी ही लगा रहे हैं।

आज चीन और भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार लगभग ८० अरब डॉलर वार्षिक होने को है। इसमें ५४ अरब डालर से अधिक के हमारे आयात होंगे। यह ५४ अरब डॉलर का माल लगभग ढाई लाख करोड़ रुपये के बराबर हो जाता है। इसके अतिरिक्त चीन के उत्पाद बड़ी मात्रा में देश में बिना बिल के भी मिलते हैं या फिर कम बिल के भी मिलते हैं। बिना बिल के जो माल अपने देश में आ रहा है उसे जोड़ लें तो चीन से कुल आयात तीन से साढ़े तीन लाख करोड़ का होगा। अगर ३.५ लाख करोड़ रुपयों का चीनी माल अपने देश में बिक

रहा है,तो इस ३.५ लाख करोड़ रुपयों के माल का कम से कम १२ प्रतिशत टैक्स तो चीन की सरकार को मिल रहा होगा। यदि हम १२ प्रतिशत टैक्स जीडीपी का अनुपात मानें तब ४० हजार करोड़ रुपये के बराबर चीन की सरकार को राजस्व या आय, हम भारतीय लोग देश में चीनी माल खरीद कर प्रदान कर रहे हैं। इस प्रकार जो देश हमारे लिए रक्षा संकट है, हम उस देश की अर्थव्यवस्था को साढ़े तीन लाख करोड़ रुपये का माल खरीद कर सशक्त बना रहे हैं और उस देश की सरकार को ४० से ५० लाख हजार करोड़ रुपये का राजस्व आप और हम उसका माल खरीद कर दे रहे हैं। यदि चीन केवल यही ४०-५० हजार करोड़ रुपये का राजस्व जो उसे हम प्रदान कर रहे हैं उसे ही हमारे ऊपर सामरिक दबाव बनाने के लिए खर्च करता है तो उससे ही वह पर्याप्त दबाव बना लेगा।

पूर्ण बहिष्कार

इस प्रकार आज हम ही यह सुरक्षा संकट अपने लिए खड़ा कर रहे हैं। चीन का माल जो पूरे देश के कोने-कोने मे छा रहा है, चाहे उसका 'टेक्सन' का केलकूलेटर हो या टीसीएल का टीवी हो, लिनोवा का कम्प्यूटर हो या अन्य ब्राण्डों के पेन व बच्चों के खिलौने हों, छोटे बल्ब हो, या बड़े विद्युत् जनन संयंत्र अथवा टेलीफोन एक्सचेन्ज ये सब बड़ी मात्रा में देश में चीन से आ रहे हैं। इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि हम चीन से आने वाले सभी उत्पादों का पूर्ण बहिष्कार करें। चीन के उत्पादों को चिह्नित करने में भी कठिनाई नहीं है क्योंकि उस पर 'मेड इन चाइना' लिखा हुआ होता है।

चीन के जिस प्रकार से आज हम पर सामरिक दबाव है,उसी प्रकार से आर्थिक दृष्टि से भी है, दो प्रकार का दबाव बन रहा है। बड़ी संख्या में देश में कारखाने बन्द हो रहे हैं। छोटे-छोटे घरेलू उपयोग की वस्तुओं से लेकर रसायन व इंजीनियरिंग के क्षेत्र पर्यन्त उद्योग एक के बाद एक चौपट हो रहे हैं।

इसलिए आज हम संकल्प लेवें कि चीन निर्मित विदेशी वस्तुओं सहित सभी विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर भारतीय उत्पाद ही क्रय करेंगे।

(साभार- पाथेय कण)

■■■

"ईश्वर का दिया कभी अल्प नहीं होता,
जो टूट जाय वो संकल्प नहीं होता।
हार को लक्ष्य से दूर ही रखना,
क्यूँकि जीत का कोई विकल्प नहीं होता॥
- आर्य अनुप्रिया वर्मा"

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉंमार) स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

लोकतंत्र और नेता

– डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री

अनेक विद्वानों का मानना है कि लोकतंत्र की परम्परा अपने देश में बहुत पुरानी है। सांस्कृतिक जागरण काल के एक प्रमुख नेता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसे वैदिक कालीन बताया है। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने लगभग चालीस पृष्ठों का एक पूरा अध्याय राजधर्म पर लिखा जिसमें वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, स्मृतियों आदि से उद्धरण देकर यह बताया है कि जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों को किस प्रकार शासन व्यवस्था चलानी चाहिए। अन्य विद्वानों ने भी इस विषय पर प्रकाश डाला है। जिन लोगों को विदेशी विद्वानों की ही बातें प्रमाणिक लगती हैं, उन्हें तो यह जानने के बाद ही संतोष होगा कि ग्रीक इतिहासकार डायोडोरस (ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी) ने भी अपने ग्रन्थ 'हिस्टोरिकल लाइब्रेरी' (२/३८) में स्वीकार किया है कि प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था थी। एरियन, कट्रियस आदि ने तो यहाँ तक लिखा है कि भारत के गणतंत्र ग्रीक गणतंत्र (अंग्रेजी में पोलिस) से भी बड़े थे। निपिसिंग यूनिवर्सिटी (ओन्टेरियो, कनाडा) में इतिहास के प्रोफेसर स्टीव मूलबर्गर ने तो 'डेमोक्रेसी इन एन्शियन्ट इंडिया' पुस्तक ही लिखी है। इसके बावजूद यह सत्य है कि जिन लोगों ने वर्तमान संविधान बनाया और देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था अपनाने का निश्चय किया, उन्हेंाने लोकतंत्र की अपनी पुरानी परम्पराओं को पुनर्जीवित करना न उचित समझा न आवश्यक। उन्होंने तो यूरोपीय देशों की विशेष रूप से इंग्लैण्ड की डेमोक्रेसी की नकल की। इसीलिए संविधान भी मूल रूप में अंग्रेजी में बनाया। पर नकल तो नकल ही होती है। जिस डेमोक्रेसी की नकल करने का हमने दावा किया, उसका स्वरूप इंग्लैण्ड में क्या है इसकी ओर इंगित करने वाली इंग्लैण्ड में हाल ही में घटी दो घटनाएँ प्रस्तुत हैं।

इंग्लैण्ड में 'डॉ.लायमफोक्स' कन्जरवेटिव पार्टी के एक नेता हैं और नोर्थ सामरसेट से संसद सदस्य हैं। उनके एक घनिष्ट मंत्री एड्रम वेरीटी (Admwerritty) स्काटिश व्यवसायी हैं। व्यवसाय में भी ये दोनों लोग साथी रहे हैं। दोनों पहले हेल्थ केयर कन्सल्टेन्सी फर्म में भागीदार थे। ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, अमरीका आदि अनेक देशों में परम्परा है कि संसद में विपक्षी दल भी अपनी 'शेडो केबिनेट' बनाता है। डॉ.फाक्स की पार्टी जब विपक्ष में थी तो डॉ.फाक्स 'शेडो डिफेन्स सेक्रेटरी' थे। तब वेरिटी भी उनके साथ विदेश यात्राओं में प्रायः जाया करते थे। अब जब डॉ.फाक्स की पार्टी सत्ता में आ गई तो वर्ष २०१० में डॉ.फॉक्स को 'सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फोर डिफेन्स' बनाया गया। कुछ ही समय बाद एडम वेरिटी पर यह आरोप लगा कि उन्होंने अपने मित्र डॉ.फॉक्स के पद का दुरुपयोग किया। अपने को उनका सलाहकार बताकर उद्योगपतियों के साथ अनेक अनौपचारिक बैठकें कीं और सलाहकार बताकर ही रक्षा मंत्रालय तक पहुँच गए। इतना ही नहीं, डॉ.फॉक्स की विदेश यात्राओं में वे भी साथ गए।

पाठक जानते ही होंगे कि ब्रिटेन में भी इस समय द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की पहली गठबन्धन सरकार है, जिसमें कन्जरवेटिव के साथ लिबरल डेमोक्रेटस भी शामिल हैं। डॉ.फॉक्स की छवि एक योग्य और ईमानदार व्यक्ति की रही है। वे प्रधानमंत्री डेविड केमरून के अत्यन्त विश्वास पात्र भी हैं। अतः जब आरोपों की आँच आई तो फॉक्स ने पहले तो स्पष्टीकरण देने का प्रयास किया, पर बाद में न्यायालय में आरोप सिद्ध होने की प्रतीक्षा करने के बजाय दो टूक शब्दों में अपनी लापरवाही के लिए स्वयं को जिम्मेदार माना और त्यागपत्र दे दिया। यद्यपि जाँच अभी चल ही रही थी रिपोर्ट अभी आई नहीं थी और अभी तक ऐसा कुछ भी सिद्ध नहीं हुआ था कि वेरिटी के जरिए डॉ.फाक्स ने कोई लाभ उठाया हो इसके बावजूद त्यागपत्र के लिए उन्हेंाने संदेह को ही पर्याप्त माना। उन्होंने अपने सम्मान को एक पद से बड़ा माना।

एक दूसरा उदाहरण देखिए। कुछ ही समय पहले की बात है। मेट्रो रेल में एक भारतीय दम्पत्ति सीट पर बैठे हुए सफर कर रहे थे। स्त्री की गोद में एक शिशु था । कुछ ही देर में मेट्रो में भीड़ हो गई अतः अब आने वाले नए यात्रियों को खड़े खड़े ही सफर करना पड़ा। इस दम्पत्ति के पास ही हैण्डिल पकड़े खड़े एक अंग्रेज ने उस शिशु की ओर स्नेह से देखा और कुछ कहा। अब बात उस स्त्री और खड़े हुए अंग्रेज के बीच होने लगी। थोड़ी देर में अवसर पाते ही उसका पति बोला 'तुम जिससे बात कर रही हो,जानती भी

हो वो कौन है?यह प्राइमिनिस्टर डेविड केमरून हैं।' स्त्री को सहसा विश्वास नहीं हुआ। उसने उसी व्यक्ति से पूछा 'क्या आप डेविड केमरून हैं? उत्तर हाँ में मिला। स्त्री को हैरानी हुई कि प्राइमिनिस्टर मेट्रो ट्रेन में और वह भी खड़े खड़े सफर कर रहे हैं उसने पूछ ही लिया कि आप मेट्रो में क्यों सफर कर रहे हैं? केमेरून ने उत्तर दिया कि मुझे गन्तव्य पर जल्दी पहुँचना है इसलिए मेट्रो से जा रहा हूँ। अगर कार से जाता तो भीड़ भरे रास्ते में देर लग जाती। ऐसा है ब्रिटेन का लोकतंत्र। नकल करने वाले क्या इसकी नकल करेंगे?

सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति (राजस्व) वित्त मंत्रालय, भारत सरकार
पी/१३८-एमआईजी, पल्लवपुरम्-२ मेरठ २५०११०
(साभार-गर्भनाल)

■■■

घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ

कविवर हरिओम पंवार

मैं भी गीत सुना सकता हूँ शबनम के अभिनन्दन के
मै भी ताज पहन सकता हूँ नंदन वन के चन्दन के
लेकिन जब तक पगडण्डी से संसद तक कोलाहल है
तब तक केवल गीत पढ़ूंगा जन-गण-मन के क्रंदन के
जब पंछी के पंखों पर हों पहरे बम के, गोली के
जब पिंजरे में कैद पड़े हों सुर कोयल की बोली के
जब धरती के दामन पर हों दाग लहू की होली के
कैसे कोई गीत सुना दे बिंदिया, कुमकुम, रोली के
मैं झोपड़ियों का चारण हूँ आँसू गाने आया हूँ।
घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ।।
कहाँ बनेंगे मंदिर-मस्जिद कहाँ बनेगी रजधानी
मण्डल और कमण्डल ने पी डाला आँखों का पानी
प्यार सिखाने वाले बस्ते मजहब के स्कूल गये
इस दुर्घटना में हम अपना देश बनाना भूल गये
कहीं बमों की गर्म हवा है और कहीं त्रिशूल चलें
सोन -चिरैया सूली पर है पंछी गाना भूल चले
आँख खुली तो माँ का दामन नाखूनों से त्रस्त मिला
जिसको जिम्मेदारी सौंपी घर भरने में व्यस्त मिला
क्या ये ही सपना देखा था भगतसिंह की फाँसी ने
जागो राजघाट के गाँधी तुम्हे जगाने आया हूँ।
घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ।।
एक नया मजहब जन्मा है पूजाघर बदनाम हुए
दंगे कत्लेआम हुए जितने मजहब के नाम हुए
मोक्ष-कामना झांक रही है सिंहासन के दर्पण में
संन्यासी के चिमटे हैं अब संसद के आलिंगन में
तूफानी बादल छाये हैं नारों के बहकावों के
हमने अपने इष्ट बना डाले हैं चिन्ह चुनावों के
ऐसी आपा धापी जागी सिंहासन को पाने की
मजहब पगडण्डी कर डाली राजमहल में जाने की
जो पूजा के फूल बेच दें खुले आम बाजारों में
मैं ऐसे ठेकेदारों के नाम बताने आया हूँ
घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ
कोई कलमकार के सर पर तलवारें लटकाता है
कोई बन्दे मातरम के गाने पर नाक चढ़ाता है
कोई-कोई ताजमहल का सौदा करने लगता है
कोई गंगा-यमुना अपने घर में भरने लगता है
कोई तिरंगे झण्डे को फाड़े-फूंके आजादी है
कोई गाँधी जी को गाली देने का अपराधी है
कोई चाकू घोंप रहा है संविधान के सीने में
कोई चुगली भेज रहा है मक्का और मदीने में
कोई ढाँचे का गिरना यू. एन. ओ. में ले जाता है
कोई भारत माँ को डायन की गाली दे जाता है
लेकिन सौ गाली होते ही शिशुपाल कट जाते हैं
तुम भी गाली गिनते रहना जोड़ सिखाने आया हूँ।
घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ।।
जब कोयल की डोली गिद्धों के घर में आ जाती है
तो बगुला भगतों की टोली हंसों को खा जाती है
इनको कोई सजा नहीं है दिल्ली के कानूनों में
न जाने कितनी ताकत है हर्षद के नाखूनों में
जब फूलों को तितली भी हत्यारी लगने लगती है
तब माँ की अर्थी बेटों को भारी लगने लगती है
जब-जब भी जयचंदों का अभिनन्दन होने लगता है
तब-तब साँपों के बंधन में चन्दन रोने लगता है
जब जुगनू के घर सूरज के घोड़े सोने लगते हैं
तो केवल चुल्लू भर पानी सागर होने लगते हैं
सिंहों को म्याऊं कह दे क्या ये ताकत बिल्ली में है
बिल्ली में क्या ताकत होती कायरता दिल्ली में है
कहते हैं यदि सच बोलो तो प्राण गँवाने पड़ते हैं
मैं भी सच्चाई गा-गाकर शीश कटाने आया हूँ।
घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ।।
भय बिन होय न प्रीत गुसांई- रामायण सिखलाती है
राम-धनुष के बल पर ही सीता लंका से आती है
जब सिंहों की राजसभा में गीदड़ गाने लगते हैं
तो हाथी के मुँह के गन्ने चूहे खाने लगते हैं
केवल रावलपिंडी पर मत थोपो अपने पापों को
दूध पिलाना बंद करो अब आस्तीन के साँपों को
अपने सिक्के खोटे हों तो गैरों की बन आती है
और कला की नगरी मुंबई लोहू में सन जाती है
राजमहल के सारे दर्पण मैले-मैले लगते हैं
इनके ख़ूनी पंजे दरबारों तक फैले लगते हैं
इन सब षड्यंत्रों से परदा उठना बहुत जरूरी है
पहले घर के गद्दारों का मिटना बहुत जरूरी है
पकड़ गर्दनें उनको खींचों बाहर खुले उजाले में
चाहे कातिल सात समंदर पार छुपा हो ताले में
ऊधम सिंह अब भी जीवित है ये समझाने आया हूँ।
घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ।।

लोक चेतना में स्वाधीनता की लय

आकांक्षा यादव

स्वतंत्रता व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। आजादी का अर्थ सिर्फ राजनैतिक आजादी नहीं अपितु यह एक विस्तृत अवधारणा है, जिसमें व्यक्ति से लेकर राष्ट्र का हित व उसकी परम्परायें छुपी हुई हैं। कभी सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत राष्ट्र को भी पराधीनता के दौर से गुजरना पड़ा। पर पराधीनता का यह जाल लम्बे समय तक हमें बाँध नहीं पाया और राष्ट्रभक्तों की बदौलत हम पुनः स्वतंत्र हो गए। स्वतंत्रता रूपी यह क्रान्ति करवटें लेती हुई लोकचेतना की उत्ताल तरंगों से आप्लावित है। यह आजादी हमें यूँ ही नहीं प्राप्त हुई वरन् इसके पीछे शहादत का इतिहास है। लाल-बाल-पाल ने इस संग्राम को एक पहचान दी तो महात्मा गाँधी ने इसे अपूर्व विस्तार दिया। एक तरफ सत्याग्रह की लाठी और दूसरी तरफ भगतसिंह व आजाद जैसे क्रान्तिकारियों द्वारा पराधीनता के खिलाफ दिया गया इन्कलाब का अमोघ अस्त्र अंग्रेजों की हिंसा पर भारी पड़ा और अन्ततः १५ अगस्त १९४७ के सूर्योदय ने अपनी कोमल रश्मियों से एक नये स्वाधीन भारत का स्वागत किया और २६ जनवरी १९५० को हम गणतंत्र राष्ट्र बने।

इतिहास अपनी गाथा खुद कहता है। सिर्फ पन्नों पर ही नहीं बल्कि लोकमानस के कंठ में, गीतों और किंवदंतियों इत्यादि के माध्यम से यह पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होता रहता है। लोकलय की आत्मा में मस्ती और उत्साह की सुगन्ध है तो पीड़ा का स्वाभाविक स्वर भी। कहा जाता है कि पूरे देश में एक ही दिन ३१ मई १८५७ को क्रान्ति आरम्भ करने का निश्चय किया गया था। पर २९ मार्च १८५७ को बैरिकपुर छावनी के सिपाही मंगल पाण्डे की शहादत से उठी ज्वाला वक्त का इन्तजार नहीं कर सकी और प्रथम स्वाधीनता संग्राम का आगाज हो गया। मगल पाण्डे के बलिदान की दास्ताँ को लोक चेतना में यूँ व्यक्त किया गया है-

जब सत्तावनि के रारि भइलि, बीरन के बीर पुकार भइल,
बलिया का मंगल पाण्डे के, बलिवेदी से ललकार भइल,
मंगल मस्ती में चूर चलल, पहिला बागी मसहूर चलल,
गोरनि का पलटनि का आगे, बलिया के बाँका सूर चलल।

१८५७ की क्रान्ति में जिस मनोयोग से पुरुष नायकों ने भाग लिया, महिलायें भी उनसे पीछे न रहीं। लखनऊ में बेगम हजरत महल तो झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई ने इस क्रान्ति की अगुवाई की। बेगम हजरत महल ने लखनऊ की हार के बाद अवध के ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर क्रान्ति की चिन्गारी फैलाने का कार्य किया-

मजा हजरत ने नही पाई केसर बाग लगाई
कलकत्ते से चला फिरंगी, तंबू कनात लगाई
पार उतरि लखनऊ का, आयो डेरा दिहिस लगाई
आसपास लखनऊ का घेरा, सड़कन तोप धराई।

रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी वीरता से अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिये। झाँसी की रानी नामक अपनी कविता में सुभद्राकुमारी चौहान उनकी वीरता का बखान करती हैं। पर उनसे पहले ही बुंदेलखण्ड की वादियों में दूर दूर तक लोकलय सुनाई देती है-

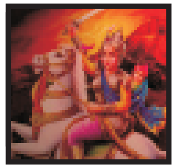

खूब लड़ी मरदानी, अरे झांसी वारी रानी
पुरजन पुरजन तोपें लगा दई, गोला चलाए असमानी
अरे झाँसी वारी रानी, खूब लड़ी मरदानी
सबरे सिपाइन को पैरा जलेबी, अपन चलाई गुरधानी....
छोड़ मोरचा जसकर कों दौरी, ढूढेहूँ मिले नहीं पानी
अरे झाँसी वारी रानी खूब लड़ी मरदानी।

बंगाल विभाजन के दौरान १९०५ में स्वदेशी बहिष्कार प्रतिरोध का नारा खूब चला। अंग्रेजी कपड़ों की होली जलाना और उनका बहिष्कार करना देशभक्ति का शगल बन गया था, फिर चाहे अंग्रेजी कपड़ों में ब्याह रचाने आये बाराती ही हों-

फिर जाहु-फिरि जाहु घर का समधिया हो
मो धिया रहिहैं कुंआरि
बसन उतार सब फेंकहु विदेशिया हो
मोर पूत रहि हैं उघार
बसन सुदेसिया मंगाई
पहिरबा होऊतब होइ हैं धिया के बियाह।

जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड अंग्रेजी हुकूमत की बर्बरता व नृशंसता का नमूना था। इस हत्याकाण्ड ने भारतीयों, विशेषकर नौजवानों की आत्मा को हिलाकर रख दिया। गुलामी का इससे वीभत्स रूप हो भी नहीं सकता। सुभद्राकुमारी चौहान ने 'जलियाँवाले बाग में वसन्त' नामक कविता के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की है-

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोडी लाकर॥
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं।
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं॥
कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढाना।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना॥

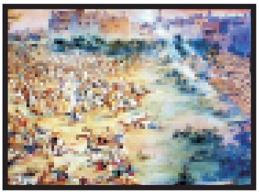

तड़प-तड़पकर वृद्ध मरे हैं
गोली खाकर।
शुष्क पुष्प कुछ वहां गिरा
देना तुम जाकर॥
यह सब करना, किन्तु बहुत
धीरे से आना।
यह है शोक-स्थान, यहाँ मत शोर मचाना॥

कोई भी क्रान्ति बिना खून के पूरी नहीं होती, चाहे कितने ही बड़े दावे किए जायें। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में एक ऐसा ही दौर आया जब कुछ नौजवानों ने अंग्रेजी हुकूमत की चूल हिला दी। नतीजतन अंग्रेजी सरकार उन्हें जेल में डालने के लिए तड़प उठी। उस समय अंग्रेजी सैनिकों की पदचाप सुनते ही बहनें चौकन्नी हो जाती थीं। तभी तो सुभद्राकुमारी चौहान ने 'बिदा' में लिखा कि-

गिरफ्तार होने वाले हैं, आता है वारन्ट अभी
धक् सा हुआ हृदय, मैं सहमी
हुए विकल आशंक सभी, मैं पुलकित हो उठी!
यहाँ भी आज गिरफ्तारी होगी, फिर जी धड़का,
क्या भैया की, सचमुच तैयारी होगी।

आजादी के दीवाने सभी थे। पर पत्नी की दिली तमन्ना होती थी कि उसका भी पति इस दीवानगी में शामिल हो। तभी तो पत्नी पति के लिए गाती है-

जागा बलम् गाँधी टोपी वाले आई गइलैं...
राजगुरु सुखदेव भगतसिंह हो
तहरे जगावे बदे फांसी पर चढ़ाय गइलै।

सरदार भगतसिंह क्रान्तिकारी आन्दोलन के अगुवा थे, जिन्होंने हँसते हँसते फाँसी के फन्दे को चूम लिया था। एक लोकगायक भगतसिंह के इस तरह जाने को बर्दाश्त नहीं कर पाता और गाता है-

'एक-एक क्षण विलम्ब का मुझे यातना
दे रहा है
तुम्हारा फंदा मेरे गरदन में छोटा क्यों
पड़ रहा है
मैं एक नायक की तरह सीधा स्वर्ग में
जाऊँगा
अपनी-अपनी फरियाद धर्मराज को सुनाऊँगा
मैं उनसे अपना वीर भगतसिंह माँग लाऊँगा।'

इसी प्रकार चन्द्रशेखर आजाद की शहादत पर उन्हें याद करते हुए एक अंगिका लोकगीत में कहा गया-

हौ आजाद त्वों अपनों प्राणे कऽआहुति दै के
मातृभूमि कैं आजाद करैलहों
तोरो कुर्बानी हम्मैं जिनगी भर नैऽ भुलैबे
देश तोरो रिनी रहेतै।

'सुभाष चन्द्र बोस ने नारा दिया कि-तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा,फिर क्या था?पुरुषों के साथ साथ महिलाएँ भी उनकी फौज में शामिल होने के लिए बेकरार हो उठे-

हरे रामा सुभाष ने फौज सजायी रे
हारी
कड़ा-छड़ा पैंजनिया छोड़बै,छोड़बै हाथ
कंगनवा रामा
हरे रामा,हाथ में झण्डा लै के जुलूस निकलबै रे हारी।

महात्मा गाँधी दौर के सबसे बड़े नेता थे। चरखा कातने द्वारा उन्होंने स्वावलम्बन और स्वदेशी का रुझान जगाया। नौजवान अपनी अपनी धुन में गाँधी जी को प्रेरणास्त्रोत मानते और एक स्वर में गाते-

अपने हाथे चरखा चलउबै हमार कोऊ का करिहै
गांधी बाबा से लगन लगउबै,
हमार कोई का करिहै।

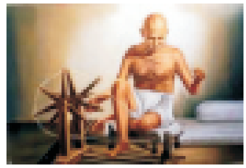

१९४२ में जब महात्मा गाँधी ने अंग्रेजो भारत छोड़ो' का आह्वान किया तो ऐसा लगा कि १८५७ की क्रान्ति फिर से जिन्दा हो गई हो। क्या बूढ़े, क्या नवयुवक, क्या पुरुष क्या महिला, क्या किसान, क्या जवान...सभी एक स्वर में गाँधी जी के पीछे हो लिऐ। ऐसा लगा कि अब तो अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना ही होगा। गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' ने इस ज्वार को महसूस किया और इस जन क्रान्ति को शब्दों से यूँ सँवारा-

बीसवीं सदी के आते ही, फिर उमड़ा जोश जवानों में
हड़कम्प मच गया नए सिरे से फिर शोषक शैतानों में
सौ बरस भी नहीं बीते थे सन् बयालीस पावन आया
लोगों ने समझा नया जन्म लेकर सन् सत्तावन आया
आजादी की मच गई धूम फिर शोर हुआ आजादी का
फिर जाग उठा यह सुप्त देश चालीस कोटि आबादी का।

भारत माता की गुलामी की बेड़ियाँ काटने में असंख्य लोग शहीद हो गए, बस इस आस के साथ कि आने वाली पीढ़ियाँ स्वाधीनता की बेला में साँस ले सकें। इन शहीदों की तो अब बस यादें बची हैं और इनके चलते पीढ़ियाँ मुक्त जीवन के सपने देख रही हैं। कविवर जगदम्बा प्रसाद मिश्र'हितैषी' इन कुर्बानियों को व्यर्थ नहीं जाने देते-

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा
कभी वह दिन भी आएगा जब अपना राज देखेंगे
जब अपनी ही जमीं होगी और अपना आसमाँ होगा।

देश आजाद हुआ। १५ अगस्त १९४७ के सूर्योदय की बेला में विजय का आभास हो रहा था। फिर कवि लोकमन को कैसे समझाता। आखिर उसके मन की तरंगें भी तो लोक से ही संचालित होती हैं। कवि सुमित्रानन्दन पंत इस सुखद अनुभूति

को यूँ संजाते हैं-

चिर प्रणम्य यह पुण्य अहन्, जय गाओ सुरगण
आज अवतरित हुई चेतना भू पर नूतन
नवभारत फिर, चीर युगों का तमस आवरण
तरुण-अरुण-सा उदित हुआ परिदीप्त कर भुवन
सभ्य हुआ अब विश्व सभ्य धरणी का जीवन
आज खुले भारत के संग भू के जड बन्धन
शांत हुआ अब युग युग का भौतिक संघर्षण
मुक्त चेतना भारत की यह करती घोषणा!

देश आजाद हो गया, पर अंग्रेज इस देश की सामाजिक-सांस्कृतिक आर्थिक व्यवस्था को छिन्न भिन्न कर गये। एक तरफ आजादी की उमंग, दूसरी तरफ गुलामी की छायाओं का डर-...गिरिजा कुमार माथुर 'पन्द्रह अगस्त' की बेला पर उल्लास भी व्यक्त करते हैं और सचेत भी करते हैं-

आज जीत की रात, पहरुए, सावधान रहना
खुले देश के द्वार, अचल दीपक समान रहना
ऊँची हुई मशाल हमारी,आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी छायाओं का डर है
शोषण से मृत है समाज, कमजोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नई जिन्दगी, यह विश्वास अमर है।

स्वतंत्रता की कहानी सिर्फ एक गाथा भर नहीं है बल्कि एक दास्तान है कि क्यों हम बेड़ियों में जकड़े, किस प्रकार की यातनायें हमने सहीं और शहीदों की किन कुर्बानियों के साथ हम आजाद हुए। यह ऐतिहासिक घटनाक्रम की मात्र एक शोभायात्रा नहीं, अपितु भारतीय स्वाभिमान का संघर्ष, राजनैतिक दमन व आर्थिक शोषण के विरुद्ध लोक चेतना का प्रबुद्ध अभियान एवं सांस्कृतिक नवोन्मेष की दास्तान है। जरूरत है हम अपनी कमजोरियों का विश्लेषण करें, तद्नुसार उनसे लड़ने की चुनौतियाँ स्वीकारें और नए परिवेश में नए जोश के साथ आजादी के नये अर्थों के साथ एक सुखी व समृद्ध भारत का निर्माण करें।

टाइप-५ निदेशक बंगला
जी.पी.ओ. कैम्पस
सिविल लाइन्स, इलाहाबाद-२११००१ (उ.प्र.)

परम पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती जी की नवीं पुण्य तिथि पर काव्य संध्या का आयोजन

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल के संस्थापक अध्यक्ष स्मृति शेष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती की नवीं पुण्यतिथि के अवसर पर 'माता लीलावन्ती सभागार' नवलखा महल, उदयपुर में दिनांक २१ जुलाई रविवार को सांस्कृतिक 'राष्ट्रवादी भावधारा में' भव्य कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ न्यास पुरोहित श्री नवनीत आर्य द्वारा गायत्री मंत्र पाठ से किया गया। इस कार्यक्रम में जाने माने विद्वान् कवियों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी। कवि श्री जगदीश तिवारी (उदयपुर) ने **'राष्ट्र के नाम चहुँ ओर हो सुगन्धि हमारी, सुबह यहाँ की सुनहरी हो'**, दिल्ली से पधारे राष्ट्रकवि डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी ने **'सदा अहिंसा सर्वोत्तम मन की कस्तूरी है, परन्तु दुष्ट नहीं माने तो हिंसा बहुत जरूरी है।'** श्रीमती शकुन्तला सरूपरिया (उदयपुर) ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को समर्पित करते हुए **'मैं पंख लगाके वाणी के ऋषि के गुण गाने आयी रे'**, चित्तौड़गढ़ के श्री अब्दुल जब्बार ने **'नैतिकता के उजले पथ पर ये सारा संसार चले, मानवता के मन मंदिर दीप दया के द्वार चलो'** उदयपुर के श्री पुष्कर गुप्तेश्वर ने 'काम क्या करने को आये, काम क्या करने लगे, देख ये बन्दे तेरे, हे राम क्या करने लगे' विषयक कविता प्रस्तुतियों द्वारा उपस्थित जनसमूह की वाहवाही बटोरी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता चित्तौड़गढ़ के पूज्यपाद स्वामी डॉ.ओमू आनन्द सरस्वती ने की तथा विशिष्ठ अतिथि के रूप में नगर परिषद, उदयपुर की महापौर श्रीमती रजनी डांगी, श्री वीरेन्द्र डांगी उपस्थित थे। पिपराली आश्रम के पूज्यपाद स्वामी श्री सुमेधानन्द सरस्वती का सान्निध्य मुख्य अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में उदयपुर के विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

न्यास मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया। इस अवसर पर स्वामी तत्त्वबोध जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने बताया कि १९८१ में उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश का शताब्दी समारोह मनाया गया था उस अवसर पर उदयपुर के प्रसिद्ध खनन उद्योगपति स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती (पूर्व नाम श्री हनुमान प्रसाद चौधरी) आर्य समाज के संपर्क में आये। नवलखा महल को आर्यों को दिलाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आपने इस न्यास से जुड़कर इसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाई तथा इसके जीर्णोद्धार के लिए एक करोड़ रु. का दान भी प्रदान किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में नगर परिषद महापौर श्रीमती रजनी डांगी ने इस विशेष कवि सम्मेलन के अवसर पर कहा कि मैं धर्म के मार्ग पर, अनुशासन के मार्ग पर चलकर देश की सेवा करती रहूँ और जीवन का एक एक क्षण हम राष्ट्र को अर्पित करते रहें, ऐसा आशीर्वाद मैं डॉ.ओमू आनन्द सरस्वती व स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती से चाहती हूँ।

-सरोज वर्मा (न्यास प्रवक्ता)

समाचार

वृष्टि यज्ञ एवं वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज,डोहरिया के नेतृत्व में भीलवाड़ा जिले के आठ गाँवों में वृष्टि यज्ञ व वेद प्रचार का कार्यक्रम सोत्साह मनाया गया। इस क्रम में धर्म सभा का भी गठन किया गया। प्रभु कृपा से १५ जून से १७ जून २०१३ तक सम्पन्न वृष्टि यज्ञ कार्यक्रम के दौरान वर्षा भी होती रही। पंडित अमरसिंह, ब्यावर एवं श्री भूपेन्द्र सिंह के भजनोपदेश कार्यक्रम को श्रोताओं द्वारा सराहा गया।

– कन्हैया लाल साहू

आर्य समाज, कृष्णपोल बाजार, जयपुर के निर्वाचन सम्पन्न

श्री ओ.पी.वर्मा

श्री कमलेश शर्मा

आगामी सत्र के लिए आर्य समाज की गतिविधियों को नवीन आयाम प्रदान करने हेतु सम्पन्न वार्षिक चुनावों में प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष का दायित्व क्रमशः श्री ओ.पी. वर्मा, श्री कमलेश शर्मा व श्री दिनेश चन्द्र शर्मा को सौंपा गया। डॉ.मदन मोहन जावलिया वेद प्रचार अधिष्ठाता के रूप में नियुक्त किए गए। सम्पूर्ण कार्यकारिणी को न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

– कमलेश शर्मा, जयपुर

९ वीं बार मंत्री बने महेश सोनी

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर के नवीन निर्वाचनों में

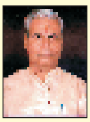
श्री महेश सोनी

श्री शम्भूराम यादव

प्रधानमंत्री व कोषाध्यक्ष के पद का दायित्व क्रमशः श्री शम्भूराम यादव, श्री महेश चन्द्र सोनी और श्री नरसिंह आर्य को सौंपा गया। आर्य समाज के प्रति समर्पित इन सभी अधिकारियों विशेषकर श्री महेश जी सोनी, मंत्री एवं सम्पूर्ण कार्यकारिणी को न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

माता प्रेमलता शास्त्री की मार्मिक अपील

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ माता प्रेमलता जी के सबल नेतृत्व में कार्य कर रहा है। विशेष रूप से असम, नागालैण्ड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उड़ीसा के ग्रामीण क्षेत्रों में कितना कार्य हो रहा

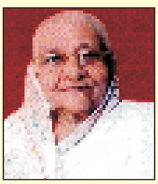
माता प्रेमलता शास्त्री

है, यह सभी जानते हैं। इसके पीछे ६० वर्षीया माता जी का आत्मबल कार्य कर रहा है। माता जी ने सभी आर्यों से मार्मिक अपील की है कि जो घरबार के कार्यों से निवृत्त हो गए हैं वे चिपक कर बैठना छोड़ें और वानप्रस्थ के रूप में कार्यक्षेत्र में निकल पड़ें। कोई कपड़े रंगने से डरता हो तो कम से कम मन-वचन व कर्म से रंगकर सेवा कार्य में प्रवृत्त हो जाये और कृण्वन्तो विश्वमार्यम के स्वप्न को साकार करने में अपना योगदान दे।

दिल्ली स्थित गुरुकुल रानीवाल व कन्या गुरुकुल, सैनिक विहार के संचालन में इच्छुक जन गुरुकुल में रहें सेवा करें और श्रद्धेया माता जी का हाथ मजबूत करें। 'अपने बच्चों के लिए आपने तीस चालीस वर्ष लगाये आइये अब राष्ट्र के बच्चों के लिए समय दीजिए' मुझे आशा है आपकी भावना को मैंने छुआ है और आप भी मेरी भावनाओं को छुयेंगे।

माता प्रेमलता शास्त्री – ०९९५३८५१०४३

आर्य समाज, दयानन्द नगर, गाजियाबाद के निर्वाचन सम्पन्न

आगामी सत्र के लिए आर्य समाज की गतिविधियों को नवीन आयाम

श्री आर.डी. गुप्त

प्रदान करने हेतु सम्पन्न वार्षिक चुनावों में प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष का दायित्व क्रमशः श्री रामेश्वर दयालु गुप्त, कैलाश चन्द्र अरोड़ा, ज्ञान प्रकाश जिन्दल को सौंपा गया। सम्पूर्ण कार्यकारिणी को न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

– कैलाश चन्द्र अरोड़ा, गाजियाबाद

आर्य समाज, सेक्टर ९, पंचकूला के निर्वाचन सम्पन्न

श्री धर्मवीर बत्तरा

श्री कमला भाटीवाल

आगामी सत्र के लिए आर्य समाज पंचकूला के सम्पन्न वार्षिक चुनावों में प्रधान व मंत्री का दायित्व क्रमशः श्री धर्मवीर बतरा व श्रीमती कमला भाटीवाल को सौंपा गया। सम्पूर्ण कार्यकारिणी को न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

–कमला भाटीवाल, पंचकूला

आर्य समाज, सरदारपुरा, जोधपुर के निर्वाचन सम्पन्न

आगामी सत्र के लिए आर्य समाज की गतिविधियों को नवीन आयाम प्रदान करने हेतु सम्पन्न वार्षिक चुनावों में प्रधान,मंत्री व कोषाध्यक्ष का दायित्व क्रमशः श्री एल.पी.वर्मा,मदनलाल गहलोत,श्री लक्ष्मण सिंह आर्य को सौंपा गया। श्री हरेन्द्र कुमार गुप्ता व श्री ओ.पी.टांक संरक्षक के रूप में आर्य समाज को दिशा निर्देश देते रहेंगे। सम्पूर्ण कार्यकारिणी को न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

–मदन लाल गहलोत, जोधपुर

भरतपुर में विश्वशांति यज्ञ एवं वेद महोत्सव सम्पन्न

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा भरतपुर का १७ वां वार्षिकोत्सव उक्त कार्यक्रमों से सुसज्जित हो भव्य रूप में ५ से ८ जून २०१३ तक श्री हीरासिंह आर्य प्रधान एवं गिर्राज प्रसाद शर्मा, मंत्री के नेतृत्व में मनाया गया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी,सीकर,डॉ. वेदपाल, मेरठ एवं भूपेन्द्र सिंह आर्य, भजनोपदेशक उपस्थित थे। सारा कार्यक्रम श्री रामसिंह वर्मा के संयोजकत्व में सुन्दरता के साथ सम्पन्न हुआ। वरिष्ठ आर्यजन प्रभातीलाल आर्य, प्रकाश आर्य नगर, अमरवती गूर्जर, अशरफी देवी, लाला राम आर्य का सम्मान किया गया और भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

– हीरा सिंह आर्य

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन सम्पन्न

श्री विजय सिंह भाटी

श्री विजय सिंह भाटी, श्री अमर मुनि तथा श्री सुधीर क्रमशः प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष पद पर निर्वाचित। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

श्री अमर मुनि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य एवं आर्य सभा मॉरिशस के अधिकारी श्री राजन मोहित दिवंगत। सत्यार्थ सौरभ परिवार एवं न्यास परिवार इस दुःख के अवसर पर हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

हलचल

चीन के जिनजियांग यूगर प्रान्त में स्थित कशगर गाँव में ग्रामीणों को मोबाइल, टेबलेट और कम्प्यूटर के लिए भारी भरकम भुगतान नहीं करना पड़ता। पैसों की जगह उन्हें भेड़ देनी होती है। यहाँ बार्टर सिस्टम यानी एक चीज के लेने के बदले कोई दूसरी चीज देने का रिवाज इलेक्ट्रॉनिक गुड्स के डीलर जी हुआंग ने शुरू किया है। दरअसल, यह गाँव शहर से काफी दूर है। यहाँ के लोग जानवरों को सस्ते दामों में बेचने पर मजबूर होते थे। ऐसे में लोगों के मन में धारणा बन गई थी कि कम्प्यूटर उनकी वास्तविक कीमत से अधिक दामों में बिकते हैं। इन्हें वे खरीद नहीं सकते। मगर जब से हुआंग ने गैजेट के लिए पैसों की जगह भेड़ लेना शुरू किया, गाँव वालों को सस्ते में ये गैजेट मुहैया होने लगे हैं। उदाहरण के लिए स्मार्टफोन खरीदने के लिए एक भेड़ और टैबलेट खरीदने के लिए दो भेड़ देनी होती हैं। वहीं, लैपटॉप की कीमत है चार भेड़। जिस डिवाइस की कीमत एक भेड़ से भी कम होती है, उसे खरीदने पर जी हुआंग गाँव वालों को पैसों का अंतर नकद दे देते हैं। – दैनिक भास्कर से साभार

दानवीर वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण आर्य को उनके द्वारा की गई सेवा

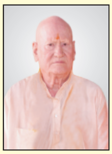

और प्रोत्साहन के क्रम में आर्य जगत् अनेक उपाधियों से सम्मानित कर चुका है। आदर्श प्रेरक महात्मा, प्रेरणास्रोत, सेवावीर, आर्य जगत् की दिव्य विभूति, दानवीर, ८७ वर्ष के नौजवान, यज्ञशाला बनाने के बादशाह, ध्रुवतारा, प्रकाशपुंज, नेताजी, नर से नारायण वैदिक धर्म के प्रचारक, प्रजा पुरुष, लौह पुरुष, गरीबों के मसीहा, हाथी सोना अनेक संस्थाओं के संरक्षक, संचालक, संस्थापक, ट्रस्टी, कुलपति, कुलपिता, अध्यक्ष मैनेजिंग ट्रस्टी इनमें उल्लेखनीय हैं।

ग्रीष्मकालीन वैदिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर तथा महर्षि दयानन्द उच्चतर माध्यमिक, विद्यालय फतहनगर के तत्वावधान में फतहनगर

विद्यालय में दिनांक १३ से १८ तक उक्त शिविर का आयोजन किया गया। शिविराधिकारी कविता शर्मा ने बताया कि इस शिविर में उदयपुर संभाग के तथा उससे बाहर के भी १०० से अधिक बच्चों ने भाग लिया। पूर्णतः आवासीय शिविर में बच्चों को जहाँ सुन्दर दिनचर्या के साथ विनम्रता, नैतिक मूल्यों का स्थापन, शुद्ध मंत्रोच्चारण, भजन गायन, व्यायाम, लाठी संचालन इत्यादि की शिक्षा दी गई वहीं अनेक स्थलों से प्रमुख बुद्धिजीवियों ने आकर बच्चों का मार्गदर्शन किया। इनमें कविता शर्मा, श्री देवी लाल आर्य, श्री जीवन लाल आर्यवीर, श्री विपिन ईनाणी, श्री राजुनाथ चौहान, श्री सोहन लाल जाट, श्री युगल किशोर शर्मा, श्री संजय कुमार लोढ़ा, सुश्री अंकिता कोठारी, श्रीमती जशोदा पालीवाल, श्री मनोज आर्य (गंगापुर सिटी), श्री दिनेश आर्य, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य, मंत्री श्री भवानी दास आर्य, पुरोहित श्री नवनीत आर्य, योगाचार्य श्री नरेन्द्र सनाढ्य, आर्य समाज समोरबाग उदयपुर के प्रधान श्री प्रकाश श्रीमाली, प्रमुख बुद्धजीवी डॉ.प्रेमचन्द गुप्त, विद्यालय संचालक श्री सुरेश मित्तल आदि के नाम प्रमुख हैं। बच्चों ने अंतिम दिन 'शिविर का उनके जीवन में महत्व' पर विचार सम्प्रेषित किए।

प्रतिस्वर

माननीय अशोक जी, सादर नमस्ते। पत्रिका निरन्तर मिल रही है। साँप सीढ़ी वाला और अभी नवीन अंक में Life becomes So Less बहुत अच्छे लगे। पत्रिका सराहनीय है। बहत-बहुत धन्यवाद। छोटे बच्चों के लिए कुछ थोड़ा-सा ज्यादा देवें। -अरविन्द पण्डित, जोधपुर

पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती की स्मृति में पंचदिवसीय व्याख्यानमाला सम्पन्न

न्यास के संस्थापक अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती की स्मृति में पंचदिवसीय व्याख्यान माला का आयोजन माता लीलावन्ती सभागार

नवलखा महल, उदयपुर में हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत् के सुविख्यात विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, आचार्य हरिप्रसाद व्याकरणाचार्य, पंडित वेदप्रिय शास्त्री एवं डॉ. सोमदेव शास्त्री के ओजस्वी, प्रेरक व हृदयस्पर्शी प्रवचन हुए जिनसे श्रोतागण आत्मविभोर हो गए। सभी की कामना थी कि न्यास के तत्वावधान में ऐसे कार्यक्रम अनेक बार हों ताकि विद्वानों के मुखारविन्द से निःसृत ज्ञान गंगा में गोते लगाकर आर्यजन लाभान्वित हो सकें।

मोगा में चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

श्री देवीदास केवलकृष्ण चेरिटेबल ट्रस्ट, जो कि पी.मार्का सरसों के तेल के औद्योगिक घराने द्वारा संस्थापित किया गया है, के सौजन्य से ६ से १६ जून २०१३ तक महात्मा चैतन्य मुनि जी एवं यति माँ सत्यप्रिया जी के निर्देशन में चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि प्रमुख समाज सेविका बहिन इन्दू पुरी जी ने अनेक कार्यक्रमों की झड़ी लगाकर इस संस्थान को मोगा निवासियों के लिए तीर्थ सदृश बना दिया है। इस संस्थान में इसके स्थापना काल से ही प्रतिदिन प्रातःकाल एवं सायंकाल सत्संग का आयोजन किया जाता है, यह गर्व का विषय है। -अनुराग शर्मा, सुन्दरनगर

कैप्टन देवरत्न आर्य की पुण्य तिथि पर यज्ञ का आयोजन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा पूर्व न्यास-अध्यक्ष (स्मृतिशेष) कै. देवरत्न आर्य की प्रथम पुण्य-तिथि के अवसर पर उनके अजमेर स्थित निवास पर परिवारीजनों द्वारा आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) के ब्रह्मत्व में दिनांक १८ से २० जुलाई २०१३ तक यजुर्वेदीय यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (पिपराली), डॉ. उत्तमा यति व डॉ. सूर्या देवी चतुर्वेदा के प्रवचन तथा भजन के कार्यक्रम हुए। कै. साहब का पार्थिव शरीर आज भले ही हमारे मध्य नहीं है परन्तु उनके आदर्श हमारे समक्ष हैं जिनका अनुसरण करना हम सभी का पावन कर्त्तव्य है। प्रभु से यही प्रार्थना है कि हम सभी को उनके बताए मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करें। इस अवसर पर न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजली।

नारी का वैदिक व आधुनिक स्वरूप

दृष्टिकोण

साध्वी डॉ. उत्तमायति

नारी विधाता की सबसे विलक्षण कृति है। यह परिवार समाज और राष्ट्र की आधार है। यह समस्त मानवीय सृष्टि की निर्मात्री ही नही, अपितु अपने ममतामय पवित्र आँचल की छाँव में मानव को पहचान भी देती है। अपने वात्सल्य की मधुर छाया में वह शिक्षा, संस्कार, दूरदर्शिता, धैर्य आदि गुणों को प्रदान करती है। एकमात्र नारी ही है जिसके कारण परिवार-समाज-राष्ट्र उन्नत, खुशहाल और संस्कृति को सहेज कर रख सकते हैं। सच ही कहा है कि 'यदि साहित्य और समाज से नारी को निकाल दिया जाए तो वह फलहीन, सुगन्धहीन एक निष्प्राण वृक्ष की तरह हो जायेगा।'

सर्वप्रथम वर्तमान दृष्टिकोण से नारी की छवि का विश्लेषण करने से पूर्व, हमें वैदिक काल में जाना होगा, जब नारी की गरिमा अपने उत्कर्ष पर थी। हमारे चारों वेद भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर हैं, उसी के आधार पर मैं नारी की गरिमा का उल्लेख करूँगी।

नारी की प्रथम भूमिका परिवार निर्माण की है। एक आदर्श पुत्री, बहन, पत्नी और माँ ये चार महान् रूप नारी को दिव्यता प्रदान करते हैं। वेद में उसे **'सुमंगलीरियं वधू'** अर्थात् पतिग्रह को खुशियों से भरने वाली बताया। सिनीवाली- अन्नपूर्णा कहा। परिवार को शुद्ध, पवित्र, स्वादिष्ट भोजन देने वाली। लक्ष्मी- सौभाग्य व सुख की देवी, दुर्गा- तेज बल व दुष्टों का संहार करने वाली, सरस्वती- ज्ञान विज्ञान की देवी। मन्त्र है- 'तिस्त्रो देवीः स्वधया बर्हिरेदमच्छिद्रं पान्तु शरणं निषद्य' (ऋ.२/३/८)

नारी को ध्वजा कहा, ब्रह्म की उपाधि दी। वैदिक नारी गर्जना करती है कि- मैं परिवार व राष्ट्र की ध्वजा हूँ, मैं तेजस्विनी हूँ। समाज, राजनीति, युद्ध, ज्ञान, विज्ञान तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी ध्वजा फहराती हूँ। मेरे वीर पुत्र शत्रुओं का नाश करने वाले, मेरी पुत्री विदुषी व महान् हैं। मैं अपने श्वसुर कुल की साम्राज्ञी बन कर जा रही हूँ। सम्पूर्ण मंत्र लिखने लगी तो लेख बहुत विस्तृत हो जायेगा, अतः बहुत संक्षिप्त में सूक्ति रूप में कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रही हूँ।

१. अहम् केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी - (ऋग्वेद)
२. सिनीवाली सुकपर्दा सुकुरीरा स्वौपशा - (यजुर्वेद)
३. मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट् - (ऋग्वेद)
४. साम्राज्ञी श्वसुरे भव साम्राज्ञी श्वश्रवां भव - (ऋग्वेद)

ये था हमारा गौरवशाली व्यक्तित्व। मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों एवं तथाकथित धर्म के ठेकेदारों ने नारी की स्थिति, इतनी दयनीय एवं शोचनीय बना दी कि जिस नारी को देवी, विदुषी, वीरांगना, साम्राज्ञी आदि से विभूषित किया जाता था, इन कथित धर्मान्धों ने उसे अशिक्षित रख कर, ढोल, गँवार, भुजंग, नरक का द्वार (नारी नरकस्य द्वारः) आदि बता कर सारी वैदिक गरिमा को धूल धूसिरित कर दिया। एक तरफ इतने कटु वचनों का प्रयोग, दूसरी तरफ मंदिरों में नारी के देवी रूप की पूजा आराधना करते रहे। इस तरह धीरे-धीरे नारी की गरिमा को समाप्त करते रहे।

फिर समय ने करवट बदली। वर्तमान युग आया, अनेक महापुरुष धरा पर आए, उन्होंने नारी की दयनीय दशा देखी। इन महापुरुषों में स्वर्णाक्षरों में यदि किसी महापुरुष का नाम लिखा जायेगा और नारी उत्थान की जब भी चर्चा चलेगी तो ऋषिवर देव दयानन्द का उल्लेख सर्वप्रथम आएगा।

हाँ तो मैं चर्चा कर रहीं थी, वर्तमान आधुनिक युग की। नारी ने वापिस अपनी गरिमा बनाने पर ध्यान दिया। किसी हद तक वो सफल भी रही। उच्च शिक्षा प्राप्त कर उच्च पदों पर आसीन हुई। आज देश ही नहीं विदेशों में भी नारी कई उच्च पदों को गौरवान्वित कर रही हैं।

उदाहरण के तौर पर राजनीति में, बैंकों में, कारपोरेट दफ्तरों में, सेना में, अध्यापन क्षेत्र में, कला के क्षेत्र में, यहाँ तक अन्तरिक्ष में भी नारी उड़ान भरने लगी। विचार करें क्यों? इसके बावजूद नारी की आन्तरिक स्थिति वही की वही है।

बाहर वह चाहे कितने ही उच्च पद पर क्यों ना हो, घर में आते ही सारा मान-सम्मान धराशाही हो जाता है। पुरुष यहाँ तक कह देते हैं कि ये अपना अफसरपना ऑफिस में ही रखा करो घर में नहीं। नारी सारा दिन नौकरी करने के बाद घर में आते ही घर के कार्यों में जुट जाती है, वहीं पुरुष आराम से

सोफे पर पसर कर हुक्म कर देते हैं, जल्दी से चाय दे दो, भई बहुत थक गया हूँ। यह दोहरी मार समय से पूर्व ही नारी को उम्रदराज, कई रोगों से ग्रस्त व स्वभाव से चिड़चिड़ा बना देती है। हम कहाँ चूक गये, हमसे कहाँ गलती हो गई। नारी का आँगन छोटा हो गया आकाश बड़ा हो गया। आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी मर्यादा भूल बैठे।

हमने आधुनिकता का अर्थ नग्नता, अश्लीलता, असंस्कारिकता और असभ्यता ले लिया। जरूरत से ज्यादा महत्वाकांक्षी होने के कारण अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया। शर्म आती है जब समाचार पत्रों को पढ़ते हैं और टी.वी. पर समाचार देखते हैं कि जगह-जगह पुलिस के छापे पड़ते हैं, और अच्छे से अच्छे संभ्रान्त परिवारों की लड़कियाँ इन काले शर्मनाक धन्धों में पकड़ी जाती हैं। क्योंकि उन्हें अपने बाहरी साजो-शृंगार व एशोआराम के लिए धन चाहिये, और इसके लिए वह किसी भी हद तक गिर सकती हैं वे अपनी अन्तरात्मा को समाप्त कर रही हैं।

आज नारी ही नारी की शत्रु हो रही है, तभी तो भ्रूण हत्या के समाचार रोज सुनने को मिलते हैं। यह कैसा धर्म है? ये कैसी पूजा है? एक तरफ तो देवी की पूजा करते हैं, जब साक्षात् देवी का रूप तुम्हारे द्वार पर आता है, तो किसी नाली में, कूड़े के ढेर में, तो कभी झाड़ियों में फेंक देते हो। छोड़ दो फिर व्यर्थ के आडम्बर। नवरात्रों के पर्व पर जगह-जगह मंदिरों में नारी रूप माता का, शक्ति की प्रतीक दुर्गा का पूजन व भजन हो रहा है- पर वाह रे! हमारा हिन्दू समाज! समझ नहीं आता है। समाचार पत्र के एक ही पृष्ठ पर नारी-पूजा का समाचार, देवी के दर्शनों के लिए मीलों लम्बी पंक्ति, वहीं दूसरा समाचार नारी जाति के साथ जगह-जगह बलात्कार, अत्याचार के शर्मनाक समाचार होते हैं। 'ये कैसा धर्म है कि मन्दिर में तो सम्मान और घर में अपमान?'

अपने गौरव, अपने स्वाभिमान को पहचानो।

जगह-जगह भगवती जागरण हो रहे हैं- माँ के नाम पर हजारों मन्दिर बने हुए हैं। मन्दिर की माता को बहुमुल्य चढ़ावा चढ़ाया जाता है, और जोर-जोर से गाया जाता है-जय माता की, चलो बुलावा आया है माता ने बुलाया है। लेकिन अफसोस! काश ऐसी ही श्रद्धा भक्ति अपनी घर की वृद्धा माता के प्रति भी होती। इस माता की आवाज तुम्हारे कानों में नहीं पड़ती? वह बेचारी एकान्त में पड़ी, अपने पुत्र की एक झलक देखने को तरस रही है।

हम नहीं कहते, आगे मत बढ़ो, विद्या ग्रहण न करो। लेकिन बहनो! अपने नारीत्व का, अपने गरिमामय इतिहास का स्मरण अवश्य रखो।

ऋग्वेद में नारी के लिए एक मन्त्र आया है-

"अधः पश्यस्व मोपरि संतरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौ दृशन्स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ।" ऋग्.८/३३/१९

मन्त्र निर्देश करता है कि हे नारी! अपनी दृष्टि नीची रख, इधर-उधर, अधिक ताक-झाँक न कर, चलते समय पाँवों को बड़ी सावधानी से रख। चंचलता से, इठलाते हुए मत चल। फिर कहा-स्त्री अपने युगलांगों को छुपाकर रखे, उनका प्रदर्शन न करे। अन्त में उसे ब्रह्म अर्थात् निर्मात्री से विभूषित किया।

नारी ही मनुष्य सृष्टि की रचना करने वाली है, यदि यह सभ्य, शिष्ट, सुशील एवं संयमी होगी तो उसकी सन्तान भी उन्हीं गुणों से परिपूर्ण होगी। आज जो हमारी सन्तानें उच्छृंकल, स्वच्छन्द, आलसी, प्रमादी, कामी, क्रोधी एवं संस्कारहीन है, उनका मुख्य कारण माता पिता ही हैं।

अतः बहनो! अन्त में एक बार फिर आपसे अनुरोध है कि आप उच्च से उच्चत्तर शिखर पर पहुँचो, खूब यश कमाओ, धन अर्जित करो, लेकिन अपनी मर्यादाओं व संस्कृति सभ्यता को दाँव पर लगाकर नहीं। हम श्रेष्ठ मार्ग पर चलें, धर्म के मार्ग चलकर अपने गौरव को बढ़ाएँ। स्तुति प्रार्थना का अंतिम मंत्र भी यही संदेश देता है 'अग्ने नय सुपथा राये' सब कुछ हासिल करो पर सुपथ के मार्ग पर चलकर। जहाँ हम अपनी भौतिकता की रक्षा करते हैं, वहीं हमें आध्यात्मिकता की भी रक्षा करनी होगी। हमें ढोंग, पाखण्ड, भ्रूण-हत्या, दहेज-प्रथा जैसी कुप्रथाओं से भी ऊपर उठना होगा, और बहनो ये सिर्फ और सिर्फ आप कर सकती हैं। प्रभु ने आपको अपार शक्ति व सामर्थ्य प्रदान दिया है।

"ऐसे बढ़ो कि आँधी लोहा मान ले,
ऐसे पढ़ो कि पुस्तक तुमसे ज्ञान ले,
सागर की गहराई मन में डालकर,
ऐसे बढ़ो कि पर्वत भी पहचान ले।"

अनगिनत शहीदों ने क्या इसी भारत की कल्पना की थी?

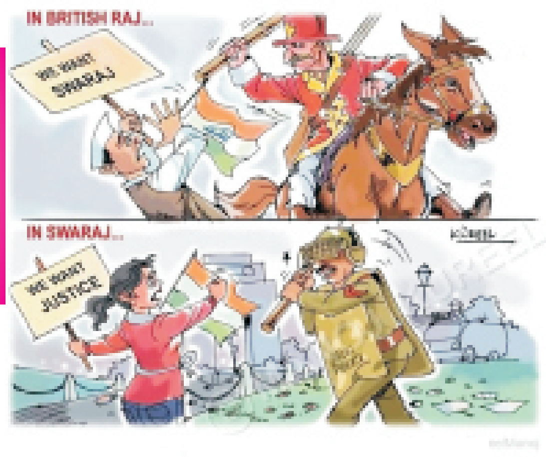

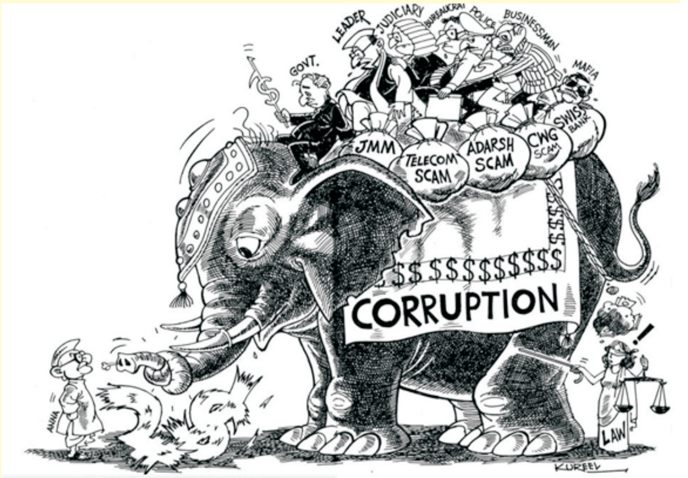

लिखी लहू से गई, शहीदों ने भिजवाई है,
देशवासियो नाम तुम्हारे पाती आई है।
दामिनी के दामन पर दरिन्दों ने दाग लगाई है,
सहयोगी साथी की दुष्टों ने जमकर करी पिटाई है।
नैतिकता की जिस देश में सदा दी गई दुहाई है,
उसी देश में बलात्कारियों की कैसी बन आई है।
पुलिस और प्रशासन ने जनता पर लाठी बरसाई है,
आँसू गैस के गोले छोड़े, पानी की बौछार कराई है।
चिदम्बरम् ने पुलिस कमिश्नर की पीठ थपथपाई है,
दिग्विजयसिंह ने रामदेव जी पर अंगुली उठाई है।
गृहमंत्री शिन्दे ने आयोग गठन की औपचारिकता निभाई है,
शीला दीक्षित ने पुलिस निष्क्रियता का दोष लगाई है।
गांधी जी के तीन बन्दरों ने खूब शोहरत पाई है,

उमाशंकर अग्रवाल

मनमोहन बोलते नहीं, सोनिया सुनती नहीं, राहुल को न पड़े दिखाई है।
'सब ठीक है' कहकर मनमोहन ने अपनी भद्द पिटवाई है,
दामिनी को सिंगापुर भेजकर सरकार ने अपना पिण्ड छुड़ाई है।
देश की एक वीरांगना की विदेश में हुई अन्तिम विदाई है,
देश के कथित कर्णधारों को जरा भी शर्म न आई है।
व्याकुल है जनता बेचारी सुरसा सी मंहगाई है,
नेताओं की है पौ बारह; खा रहे मलाई है।
बूढ़े माँ-बाप के अरमानों की नहीं हो रही भरपाई है,
एकल परिवार में मस्त हो रहे लोग-लुगाई है।
'बेटे का सिर वापस लाओ'
शहीद की माँ ने गुहार लगाई है,
बहरी सरकार ने चुल्लू भर पानी में डूब मरने की जगह न पाई है।
लिखी लहू से गई शहीदों ने भिजवाई है,
देशवासियो नाम तुम्हारे पाती आई है।

मैं जश्न-ए आज़ादी भला किस दिन को मनाऊ
मेरे आज़ाद होने की कोई तारीख तो बतलाए॥

सत्यार्थ-पीयूष

विद्यार्थियों का तपस्यामय जीवन

गुरुकुल में विद्यार्थियों का जीवन तपस्यामय होना चाहिए। अपने उद्देश्य की पूर्ति में जो अतिकष्ट उठाया जाता है और असफल होने के बाद भी व्यक्ति के मन में तनिक भी निराशा के भाव नहीं आते और वैसा ही उत्साह बना रहता है तो उसे तप कहते हैं। इस विषय में महर्षि लिखते हैं ''तपस्वी अर्थात् धर्मानुष्ठान करते हुए वेदादिशास्त्रों को पढ़ें और पढ़ावें।'' (सत्यार्थ प्रकाश - तृतीय समुल्लास)। निष्कर्ष यह है कि बिना कष्ट उठाये अर्थात् तप किये बिना विद्या नहीं आती। इसलिए गुरुकुल में विद्यार्थियों का जीवन तपस्यामय होना चाहिए।

अध्यापकों का श्रेष्ठ चरित्र और उनका शिष्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध- शिक्षा एक जीवन्त प्रक्रिया है। जिसका प्रदाता आचार्य है तो आहर्ता शिष्य होता है। एक के भी त्रुटिपूर्ण होने पर सम्पूर्ण क्रिया एवं समारम्भ निष्फल हो जाता है। महर्षि जी ने दुष्ट एवं अल्पज्ञानी तथा बाल मनोविज्ञान शून्य व्यक्ति को अध्यापक बनाने का निषेध किया है।

महर्षि धनवन्तरि जी आचार्य के गुणों के बारे में लिखते हैं- ''जिसने शुद्धता पूर्वक विद्याभ्यास किया हो, जो शिल्पकला- कौशल, चित्र-लेखनादि हस्त क्रियाओं में कुशल हो, बुरे-भले कर्मों को जानने वाला अनुभवी हो, बड़ा सरल, चतुर, स्वभाव उदार, मन, बुद्धि, शरीर, इन्द्रिय आदि से शुद्ध रहने वाला हस्त आदि अवयवों से वृथा कुचेष्टा, कुकर्म, वृथा शिष्य ताड़नादि न करने वाला एवं पढ़ाने के पुस्तक, यंत्र, आयुध आदि सर्व साधन सम्पन्न हो।''

आचार्य चाणक्य (नीति अध्याय ४ में) कहते हैं- ''त्यजेद् धर्मम् दयाहीनं-विद्याहीनं गुरुं त्यजेद्'' अर्थात् धर्म, दया, विद्या से हीन गुरु को त्याग देना चाहिए।

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि ''जो अध्यापक पुरुष वा स्त्री दुष्टाचारी हों, उनसे शिक्षा न दिलावें, किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त, धार्मिक हों वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं।'' (सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास)

वेद में गुरु शिष्य के सम्बन्ध को बड़ा घनिष्ठ बताया गया है। वेद के ब्रह्मचर्य सूक्त के एक मंत्र में कहा गया है कि आचार्य ब्रह्मचारी का उपनयन करके उसे गुरुकुल में प्रवेश कराके मानो अपने गर्भ में रख लेता है (अथर्व ११/५/३) इस प्रकार गुरुकुल में आचार्य, आचार्य और माता-पिता इन तीनों की जिम्मेवारियाँ सम्भालता है। उपनयन संस्कार में आश्व. गृह्यसूत्र का एक मंत्र बोला जाता है। जिसमें गुरु शिष्य से कहता है- 'मैं तुझे अपने हृदय में लेता हूँ, तेरे चित्त को अपने चित्त में लेता हूँ। हम एक मना हो जाएँ। इससे स्पष्ट होता है कि गुरुकुल में आचार्य-शिष्य का सम्बन्ध बहुत ही घनिष्ठ रहता है, जो विद्यार्थी के संतुलित विकास के लिए आवश्यक है।

पाठ्यक्रम विशेषताएँ :- आदर्श शिक्षा तभी सम्भव है जब हमारे शिक्षण क्रम में आर्ष ग्रन्थों को स्थान मिले जो साक्षात्कृतधर्मा, आप्त, महाशय महर्षियों द्वारा लिखे गये हैं। स्वामी दयानन्द ने इस प्रसंग में सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा है ''ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को इसलिए पढ़ना चाहिए कि वे बड़े विद्वान् सब शास्त्रवित् और धर्मात्मा थे। और अनृषि अर्थात् जो अल्प शास्त्र पढ़े हैं और जिनका आत्मा पक्षपात सहित है उनके बनाये ग्रन्थ भी वैसे ही है।'' ऋषि ने न केवल आर्ष ग्रन्थों को पढ़ने की ही संस्तुति की, साथ ही ऐसे ग्रन्थों का नामोल्लेख भी कर दिया जो पठन पाठन व्यवस्था में स्थान प्राप्त करने की योग्यता रखते हैं। उन्होंने षड्दर्शनों के मूल सूत्र ग्रन्थों पर विभिन्न ऋषियों द्वारा लिखे गये भाष्य, व्याकरण में पाणिनी कृत अष्टाध्यायी तथा उस पर पतंजलि कृत महाभाष्य, निरुक्त शास्त्र में महर्षि यास्क प्रणीत निघण्टु एवं निरुक्त, महर्षि पिंगल द्वारा लिखित छन्दो-ग्रन्थ, वेदों की व्याख्या में लिखे गये ब्राह्मण तथा आरण्यक, ब्रह्मविद्या के प्रतिपादक ईशादि दश या ग्यारह उपनिषद्, स्मृति शास्त्र में मनुस्मृति, इतिहास ग्रन्थों में वाल्मीकीय रामायण तथा कृष्णद्वैपायन व्यास रचित महाभारत (तदन्तर्गत विदुरनीति) आदि के पढ़ने को प्राथमिकता दी है। ऋषियों द्वारा रचित ग्रन्थों की महत्ता और उपयोगिता बताते हुए महाराज लिखते हैं कि ''महर्षि लोगों का आशय जहाँ तक हो सके, वहाँ तक सुगम और जिसके ग्रहण में समय थोड़ा लगे, इस प्रकार का होता है। क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहाँ तक बने,

वहाँ तक कठिन रचना करनी, जिसको बड़े परिश्रम से पढ़के अल्प लाभ उठा सकें। जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना। और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना, बहुमूल्य मोतियों का पाना। (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास) इसके साथ ही स्वामी जी ने उन अनार्ष ग्रन्थों की सूची भी दे दी है जिनका पाठ्यक्रम में कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

ऋषि दयानन्द शिक्षा पद्धति में वेदों के अध्ययन को सर्वोच्च स्थान देने के समर्थक हैं। उनकी दृष्टि में वेद सर्व विद्याओं के भण्डार, मनुष्य जाति के हितार्थ सृष्टि के आदि में प्रादुर्भूत ईश्वरीय ज्ञान हैं। वेदों की शिक्षाएँ सृष्टिक्रम तथा प्रत्यक्षादि प्रमाणों के सर्वथा अनुकूल, मनुष्य की बुद्धि, विवेक तथा उसके चिन्तन-मनन को जागृत करने वाली, सार्वभौम, सार्वजनीन तथा सार्वकालिक हैं। वेदों में परा और अपरा दोनों प्रकार की विद्याओं का समावेश है। एक ओर वेद अपने हिरण्यगर्भ सूक्त, पुरुष सूक्त, अस्यवामीय सूक्त, इन्द्र सूक्त, तथा नासदीय सूक्त जैसे अध्यात्म विद्या प्रतिपादक प्रकरणों के द्वारा मानव को परमात्मा, जीव, प्रकृति, सृष्टि रचना, मोक्षादि पारलौकिक तत्त्वों का बोध करते हैं दूसरी ओर इन्हीं वेदों से सभी प्रकार की पदार्थ विद्याओं का भी ज्ञान होता है। सर्वविध भौतिक तथा सामाजिक विद्यायें (Natural and Social Sciences) वेदों में बीज रूप में विद्यमान हैं। (विस्तार में जानने के लिए ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के पृथिव्यादि लोक भ्रमण, धारणाकर्षण, गणित विद्या, नौ विमानादि विषय, तार विद्या, वैद्यक शास्त्र विषयक प्रकरण देखें।) अतः मनुष्य जाति के व्यापक हित में वेदों को पाठ्यक्रम में स्थान मिलना ही चाहिए।

स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट शिक्षा प्रणाली की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे अध्ययन को केवल बुद्धि विलास की ही वस्तु नहीं मानते हैं, उनकी दृष्टि में जीवन निर्वाह के लिए विद्याध्ययन की व्यावहारिक उपयोगिता है। इसलिए वे पाठ्यक्रम में आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद तथा अर्थवेद आदि उपवेदों के अध्ययन को आवश्यक मानते हैं। आयुर्वेद शरीर को स्वस्थ एवं निरोगी रखने का विज्ञान है तो उसके अन्तर्गत औषध निर्माण आदि बातें भी आ जाती हैं। धनुर्वेद केवल शस्त्र संचालन ही नहीं सिखाता, शासन प्रणाली तथा प्रजा का रक्षण जैसे राजनैतिक विषय भी इसके अन्तर्गत आते हैं। गन्धर्ववेद ललित कलाओं का शिक्षण देता है। काव्य, संगीत, चित्रकला, स्थापत्य आदि का समुचित प्रशिक्षण मनुष्य के जीवन को कलामय तथा परिपूर्ण बनाता है। अर्थवेद तो समाज तथा राष्ट्र की भौतिक समृद्धि का आधार ही है। पुराकाल में उपर्युक्त सभी

विषयों पर उत्कृष्ट ग्रन्थ लिखे गये थे किन्तु इनमें से अधिकांश आज उपलब्ध नहीं हैं। (विस्तार से जानने के लिए पं. भगवद्दत्त कृत 'आर्य राजनीति के प्रमुख तत्त्व' देखें) स्वामी जी भविष्यद्रष्टा, क्रान्तदर्शी ऋषि थे। यद्यपि वे पश्चिमी भाषा और साहित्य से सर्वथा अपरिचित ही थे, तथापि यूरोप के देशों में आई औद्योगिक क्रान्ति तथा उसके परिणामस्वरूप वहाँ के देशों में विकसित विज्ञान, तकनीकी ज्ञान, कला कौशल तथा प्रोद्यौगिकी की उपयोगिता तथा लाभों से वे परिचित थे। उनका विचार था कि भारत के कुछ युवकों को इन उद्योगों का प्रशिक्षण लेने के लिये जर्मनी भेजा जाना चाहिए। इस विचार को क्रियान्वित करने के लिए उन्होंने जर्मनी के एक शिक्षा शास्त्री डॉ. ए. वाइज से विस्तृत पत्र व्यवहार भी किया है। ऐसा लगता है कि १८८३ में उनका असामयिक निधन हो जाने के कारण वे अपनी उपर्युक्त योजना को क्रियान्वित नहीं कर सके। अन्यथा आज सामाजिक परिवेश ही कुछ और होता।

संपादक- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाबबाग

महर्षि दयानन्द चित्र दीर्घा-नवलखा महल

नवलखा महल जीर्णोद्धार तथा सौन्दर्यीकरण हेतु जो महानुभाव अर्थ सहयोग भेज रहे हैं, उनका आभार प्रदर्शित करते हैं। **छोटी-बड़ी जो भी आहुति हो निःसंकोच इस पवित्र कार्य हेतु अर्थ सहयोग प्रदान करें।**

श्रीमती किरण माहेश्वरी को पितृशोक

राजसमन्द से सांसद तथा भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की उपाध्यक्ष श्रीमती किरण माहेश्वरी के पिताजी का निधन दिनांक २४ जुलाई २०१३ को हो गया। सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक संवेदना।

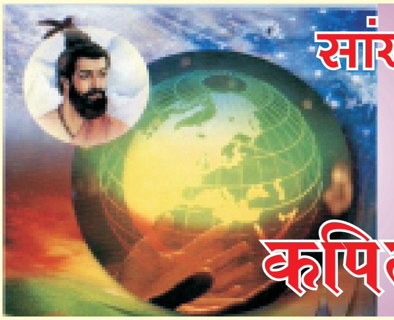

सांख्यदर्शन के प्रवर्तक कपिल मुनि

प्राचीन भारत के वैज्ञानिक दार्शनिकः

डॉ. भवानी लाल भारतीय

सांख्य दर्शन के प्रवक्ता महर्षि कपिल को संसार का प्रथम दार्शनिक माना जाता है। भागवत पुराण में कपिल मुनि के जीवन तथा सिद्धान्तों पर विस्तार से लिखा गया है। इनके पिता का नाम ऋषि कर्दम तथा माता का नाम देवहूति उल्लिखित है। सांख्यशास्त्र की परम्परा कपिल से आविर्भूत होकर आगे चली। इसमें आगे आने वाले दार्शनिकों में आसुरि, पंचशिख आदि के नाम आते हैं। सांख्य दर्शन मूल रूप से चेतन सत्ता तथा अचेतन सत्ता के भेद को लेकर चलता है। चेतन को पुरुष तथा अचेतन (जड़) को प्रकृति नाम से पुकारा गया है। चेतन पुरुष भी दो प्रकार के हैं। सत्, चित तथा आनन्द रूप अनादि अनन्त चेतन पुरुष परमात्मा (ईश्वर) है जबकि अल्पज्ञ, अल्पशक्ति वाला, शरीर तथा देशकाल की सीमा में बंधा चेतन जीवात्मा कहलाता है।

कालान्तर में सांख्यदर्शन की एक शाखा अनीश्वरवादी बन गई तथा उसमें ईश्वर के अस्तित्व को नकार दिया गया। इसके विपरीत सेश्वर सांख्य के प्रस्तोताओं ने ईश्वर को मान्य किया। गीता में भी सांख्य का प्रवचन मिलता है। यहाँ परमात्मा को उत्तम पुरुष कहा गया है और लिखा है- 'उत्तमः पुरुषस्तु अन्यः' उत्तम पुरुष अन्य जीव से भिन्न है परमात्मा है। सांख्य दर्शन के अनुसार संसार पच्चीस तत्त्वों से संयुक्त है। जड़ प्रकृति जो इस विश्व का उपादान कारण है त्रिगुणात्मिका (सत्व,रज तथा तम युक्त) है। परमात्मा से सान्निध्य या ईक्षण (इच्छा) से इसमें विकार उत्पन्न होता है जो आगे भौतिक जगत् का रूप लेता है। तीनों गुणों की साम्यावस्था ही प्रकृति है। यह आगे महत्तत्व, उससे अहंकार तथा आगे पंचतन्मात्रा, एकादश इन्द्रियों के रूप में उद्भूत होते हैं। तन्मात्राओं से पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश नामक पंचमहाभूत जन्म लेते हैं और इन भूत पदार्थों से दृश्यमान जगत् अस्तित्व में आता है। इन चौबीस तत्त्वों के साथ पच्चीसवें चेतन (परमात्मा-जीवात्मा) पुरुष की गणना होती है। सांख्यशास्त्र के दार्शनिक पक्ष तथा इसके प्रवक्ता दार्शनिकों का विस्तृत एवं तथ्यात्मक इतिहास पंडित उदयवीर शास्त्री ने लिखा है। इसमें इस दर्शन की प्राचीनता तथा पूर्ववर्ती एवं परवर्ती आचार्यों के योगदान की चर्चा के साथ साथ इस दर्शन के महत्व का विवेचन किया गया है।

जब निरीश्वर सांख्य का प्रवर्तन हुआ तो यह माना जाने लगा कि प्रचलित षडध्यायी सांख्य जो कपिल रचित माना जाता है वह प्राचीन नहीं है। इस विचारधारा में ईश्वर कृष्ण रचित सांख्यकारिका को सांख्य का प्राचीन ग्रन्थ कहा गया तथा प्रचारित किया गया कि इन कारिकाओं का आधार लेकर ही षडध्यायी कापिल सांख्य की रचना हुई है। उदयवीर शास्त्री ने सप्रमाण सिद्ध किया कि वस्तुतः सांख्य के कपिल रचित सूत्र ही प्राचीन हैं और अनीश्वरवाद का समर्थन करने वाली सांख्य सप्तति परवर्ती है। सांख्य को अनीश्वरवादी सिद्ध करने के प्रकरण को दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास में उठाया तथा 'ईश्वरासिद्धेः, प्रमाणभावान्न तत्सिद्धि' आदि सूत्रों का वास्तविक अर्थ सिद्ध किया और बताया कि सांख्य में ईश्वर को सृष्टि का उपादान कारण मानने का निषेध है, उसके अस्तित्व से इंकार नहीं। सांख्यदर्शन सत्कार्यवाद में विश्वास रखता है। सृष्टि अपने वर्तमान रूप व्यक्त्यावस्था आने से पहले कारण रूप में (सूक्ष्म अवस्था) में विद्यमान रहती है। मृत्तिका रूपी सत् पदार्थ के कारण ही उसका कार्य रूपी घट (घड़ा) परिवर्तित होकर हमारे सामने आता है। सांख्य दर्शन का प्रास्ताविकसूत्र कहता है कि त्रिविध दुःखों (आधिदैविक आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक) की अत्यन्त निवृत्ति अत्यन्त (चरम) पुरुषार्थ है और यह अत्यन्त निवृत्ति पुरुष (जीव, ब्रह्म) तथा प्रकृति के यथार्थ ज्ञान से होती है।

३/५-शंकर कॉलोनी,श्रीगंगानगर

भूल सुधार

सत्यार्थ सौरभ जुलाई अंक पृ.०७ पर महर्षि दयानन्द के मथुरा गुरुवर विरजानन्द के पास पहुँचने का सन् १९६० लिखा है। कृपया इसे १८६० पढ़ें। – संपादक

ओ३म्

आमंत्रण

धार्मिक एवं वैज्ञानिक जगत् का एक अनूठा आयोजन

ईश्वर-तत्व-विज्ञान-शिविर

११ से १३ नवम्बर २०१३

मान्यवर! चिन्तन,मनन तथा विवेक से सत्य का निर्धारण होता है। पर आज के युग में जो मत मीडिया आदि के माध्यम से धन बल के द्वारा जितना प्रचारित कर दिया जाता है, वही मत सत्य समझा जाता है अथवा जो मत पश्चिमी वा अन्य देशों से प्रचारित किया जाता है, वही मत वैज्ञानिक सत्य से युक्त है ऐसी धारणा बना ली जाती है। ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म, कर्मफल व्यवस्था, भारतीय इतिहास व प्राचीन ज्ञान-विज्ञान सभी कुछ नूतन शिक्षा पद्धति से पठित विद्वानों के मत में कल्पना की वस्तुएँ हैं। इस राय के निर्माण में वे लोग सहायक हैं जो ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म, भारतीयता के ध्वजवाहक माने जाते हैं, परन्तु इनके नाम पर वे प्रायः रूढ़िवाद, कट्टरता, साम्प्रदायिकता, अंधविश्वास आदि को ही ढो रहे हैं। विज्ञान पढ़ा आज का नौजवान स्वाभाविक रूप से धर्म के नाम पर प्रचलित अन्धविश्वास को कैसे सत्य मानेगा? उधर विगत दिनों विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक माने जाने वाले स्टीफन हॉकिंस के द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को अपनी पुस्तक The Grand Design में जिस प्रकार चुनौती दी गयी और उसे भारतीय मीडिया ने जिस प्रकार हाथों हाथ लेकर प्रचारित किया उससे आज के नवयुवक की ईश्वर में अनास्था-वृद्धि हुई। अतः अत्यन्त आवश्यक है कि ईश्वर धर्म आदि की वैज्ञानिक व्याख्या की जाय। पर यह कार्य सर्वथा उपेक्षित है। हमारे पूज्य आचार्य श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक वैदिक व आधुनिक भौतिक विज्ञान पर गम्भीर शोध कर रहे हैं। इसी क्रम में ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण नामक सबसे प्राचीन व गूढ़ ब्राह्मण ग्रन्थ ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य कर रहे हैं। यह कार्य हमारी जानकारी के अनुसार सम्भवतः विश्व में प्रथम बार हो रहा है। आचार्य श्री विश्व के वर्तमान विकसित भौतिक विज्ञान की अनेक गम्भीर समस्याओं का समाधान अपने इस भाष्य से करने के प्रति आशान्वित हैं और इसी समाधान क्रम में वैदिक वाङ्.मय वर्तमान वैज्ञानिक जगत् में प्रतिष्ठित होगा, क्योंकि समाधान करने में वही सक्षम है, आचार्य श्री का यह दृढ़ विश्वास है। इसी की संक्षिप्त रूपरेखा बुद्धिजीवियों के समक्ष रखने हेतु यह आयोजन है। निम्न बिन्दुओं पर आचार्य श्री का प्रवचन होगा।

१. ईश्वर नाम का कोई पदार्थ सृष्टि में है, वा नहीं? स्टीफन हॉकिंस अथवा अन्य किसी भी वैज्ञानिक द्वारा ईश्वरवाद के खण्डन के पीछे मूल कारण क्या है?

२. यदि ईश्वर नामक कोई सत्ता ब्रह्माण्ड में है तो उसका गुण-धर्म-स्वरूप कैसा होना चाहिए?ईश्वर क्या केवल आस्था करने की वस्तु है अथवा उसका ठोस वैज्ञानिक स्वरूप है?

३. यदि ईश्वर नामक पदार्थ वास्तव में है, तो उसके नाम पर विश्व में विभिन्न सम्प्रदायों में इतने गम्भीर मतभेद क्यों हैं?जबकि अन्य पदार्थों यथा- सृष्टि विज्ञान, भौतिक विज्ञान, खगोल विज्ञान, आयुर्विज्ञान, गणित, इंजीनियरिंग, अर्थशास्त्र, कृषिशास्त्र आदि के नाम पर मतभेद क्यों नहीं है?

४. यदि ईश्वर नामक कोई पदार्थ है, तो उसके मानने वालों यहाँ तक कि ईश्वर विषय के गम्भीर व्याख्याताओं में परस्पर वैर विरोध तथा कथनी व करनी का भारी भेद वा मिथ्या छल कपट आदि क्यों हैं, जबकि विज्ञान के नाम पर ऐसा कहीं नहीं देखा जाता, सिवाय किसी अपवाद के। अनीश्वरवादियों में ये अवगुण तो हो सकते हैं परन्तु ईश्वरवादियों में ये अवगुण होने ही नहीं चाहिए। कहीं ऐसा तो नहीं है कि ईश्वरवादी धर्मगुरू केवल यश व धन की प्राप्ति के लिए ही ईश्वर-२ कहकर भावुक भक्तों को छल रहे हों और उन्हें मन में ईश्वर का विश्वास ही न हो।

५. कहीं ऐसा तो नहीं है कि जिस ईश्वर के नाम पर संसार भर में जो दिखाई दे रहा है, ऐसा कोई ईश्वर इस ब्रह्माण्ड में हो ही न अथवा ईश्वरवादी जैसे ईश्वर को मानते हैं, वास्तविक ईश्वर वैसा हो ही न।

पूज्य आचार्य श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक के द्वारा स्टीफन हॉकिंस के अनीश्वरवाद की तार्किक, वैज्ञानिक समीक्षा करके ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि एवं उसके वास्तविक वैज्ञानिक स्वरूप व गुण धर्म को तार्किक व वैज्ञानिक रीति से प्रतिपादित किया जायेगा।

अतः हमारी आकांक्षा है कि प्रतिभाशाली वैज्ञानिक दृष्टि वाले बुद्धिजीवी I.I.T., I.I.M., मेडीकल कॉलेज, इंजीनियरिंग, विश्वविद्यालय के वरिष्ठ छात्र, शोध छात्र, प्रोफेसर्स, इंजीनियर्स, डॉक्टर्स, प्रख्यात शिक्षाविद्, शासकीय अधिकारी, कर्मचारी, प्रबुद्ध व्यापारी, समाज सेवी, पत्रकार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के संवाददाता आदि शिविर में आएँ तथा पूर्ण निष्पक्ष व वैज्ञानिक विवेचना का लाभ उठायें। यदि कोई प्रतिभाशाली अनीश्वरवादी इस शिविर के उद्घाटन समारोह में ईश्वरवाद के खण्डन में वैज्ञानिक युक्तियों से पुष्ट व्याख्यान देना चाहेंगे, तो उन्हें कुल मिलाकर दो घंटे का समय दिया जायेगा। उसके उपरान्त आचार्य जी उन वक्ताओं तथा स्टीफन हॉकिंस की पुस्तक में दी हुयी सभी युक्तियों का उत्तर देंगे।

महानुभाव! हम उन बन्धुओं को भी मत, सम्प्रदाय, वर्ग, देश, भाषा के सभी मतभेद भुलाकर इस शिविर में आमंत्रित करना चाहेंगे, जो ईश्वर, खुदा, गॉड आदि के नाम पर धार्मिक रीति-रिवाजों को तो मानते हैं परन्तु वे विज्ञान के तर्कों से भयभीत भी हैं। केन्द्र बिन्दु यही है ईश्वर है तो भी वह एक ही होगा, उसका एक ही वैज्ञानिक स्वरूप होगा। तब भी उसके नाम पर भेदभाव, अमानवीयता का होना सम्भव नहीं।

आइये! विश्व के इस गम्भीर विषय पर खुले मस्तिष्क व उदार हृदय से आचार्य जी के विचारों का श्रवण करके अपने आत्मा व मस्तिष्क को जो भी उचित व वैज्ञानिक प्रतीत होवे, अपना कर मानवता की रक्षा में सहयोग देवें।

ध्यातव्यः-

१.जो महानुभाव इस शिविर में आना चाहते हैं, वे आश्विन अमावस्या, वि.सं. २०७० तदनुसार ०४.१०.२०१३ तक अपना आत्म विवरण (Bio-Data) स्पीड पोस्ट, ई-मेल अथवा रजिस्टर्ड पंजीकृत डाक से भेजकर पंजीकरण अवश्य कराने का कष्ट करें।

२.अनीश्वरवाद के पक्षधर सज्जनों को अपना मत युक्तिपूर्वक रखने का समय अवश्य दिया जावेगा। ऐसे वक्ताओं की अधिकतम कुल समय सीमा २ घंटे से अधिक न होगी तथा आपको अपना युक्तिपूर्ण लेख पूर्व में प्रेषित करना होगा।

३. पंजीकरण व स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर लें।

निवेदक
मंत्री
श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मंदिर
भागल भीम, तह. भीनमाल, जिला- जालौर ३४३०२९
सम्पर्क- ०९८२९१४८४००, ०७७४२४१९९५६

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

•सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

•सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

➲ धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
➲ पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
➲ मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
➲ मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
➲ सुन्दर गेटअप "५.६X९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४० ₹

प्राप्ति स्थल
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर - ३१३००१

• अधिकारी वर्ग से विशेष निवेदन-कृपया अपनी संस्था को 'सत्यार्थ-सौरभ' परिवार से अवश्य जोड़े।
• विद्वानों से निवेदन है कि वे केवल सत्यार्थ-सौरभ के लिये लिखे गये अपने संक्षिप्त, सारगर्भित लेख प्रेषित करने की कृपा करें।

बाल वाटिका

अवसर

एक युवक एक किसान की सुन्दर बेटी से विवाह करना चाहता था। वह किसान के पास गया और उसकी अनुमति माँगी। किसान ने युवक की ओर देखा व कहा कि बेटे उस खेत में जाकर खड़े हो जाओ । मैं एक एक करके तीन बैल छोड़ूंगा। अगर तुम उनमें से एक की भी पूँछ पकड़ने में सफल हुए तो मैं अपनी बेटी से तुम्हारा विवाह कर दूँगा। युवक खेत में जाकर खड़ा हो गया और पहले बैल का इंतजार करने लगा। तभी बाड़े का दरवाजा खुला और उसमें से एक बहुत बड़ा बैल बाहर निकला। युवक ने बैल की ओर देखा और सोचा कि यह बहुत बड़ा व ताकतवर है। अतः इसे जाने देता हूँ। निश्चित ही दूसरा बैल इसके मुकाबले में; मैं पूँछ पकड़ सकूँ ऐसा होगा। अतः जैसे ही बैल उसकी ओर बढ़ा तो वह भागकर दूर जा खड़ा हुआ। अब वह दूसरे बैल का इंतजार करने लगा। तभी बाड़े का दरवाजा दुबारा खुला अविश्वसनीय उसने इतना बड़ा और उग्र बैल अपने जीवन में कभी नहीं देखा। बैल युवक को घूरते हुए अपने पैरों से जमीन को खुरच रहा था। इसे देखकर

युवक ने सोचा कि अगला बैल जैसा भी होगा वह इससे ठीक ठाक होगा। मैं उसी की पूँछ पकड़ूंगा। यह सोचकर वह युवक भागकर बाड़ के उस पार जाकर खड़ा हुआ। अब तीसरी बार बाड़े का दरवाजा खुला और एक बड़ा कमजोर सा बैल उसमें से बाहर निकला। युवक के चेहरे पर अब मुस्कराहट आ गई। उसने निश्चय किया कि वह इसी की पूँछ पकड़ेगा। जैसे ही वह बैल दौड़ता हुआ उसके नजदीक आया। वह कूदकर उसके पीछे जाकर उसकी पूँछ पकड़ने लगा। पर यह क्या उस बैल के तो पूँछ ही नहीं थी।

शिक्षा-जीवन में अनेक अवसर आते हैं। हमेशा प्रथम अवसर का ही लाभ उठा लेना चाहिए।

Life is full of opportunities.
Always grab the first one.

प्रस्तुति- स्मिता विशाखन

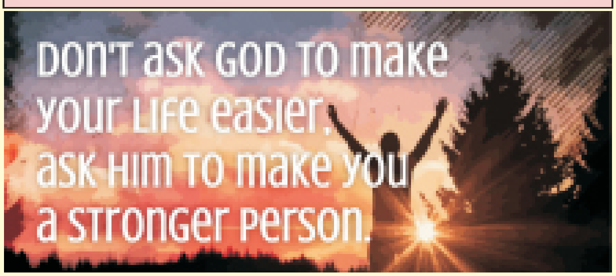

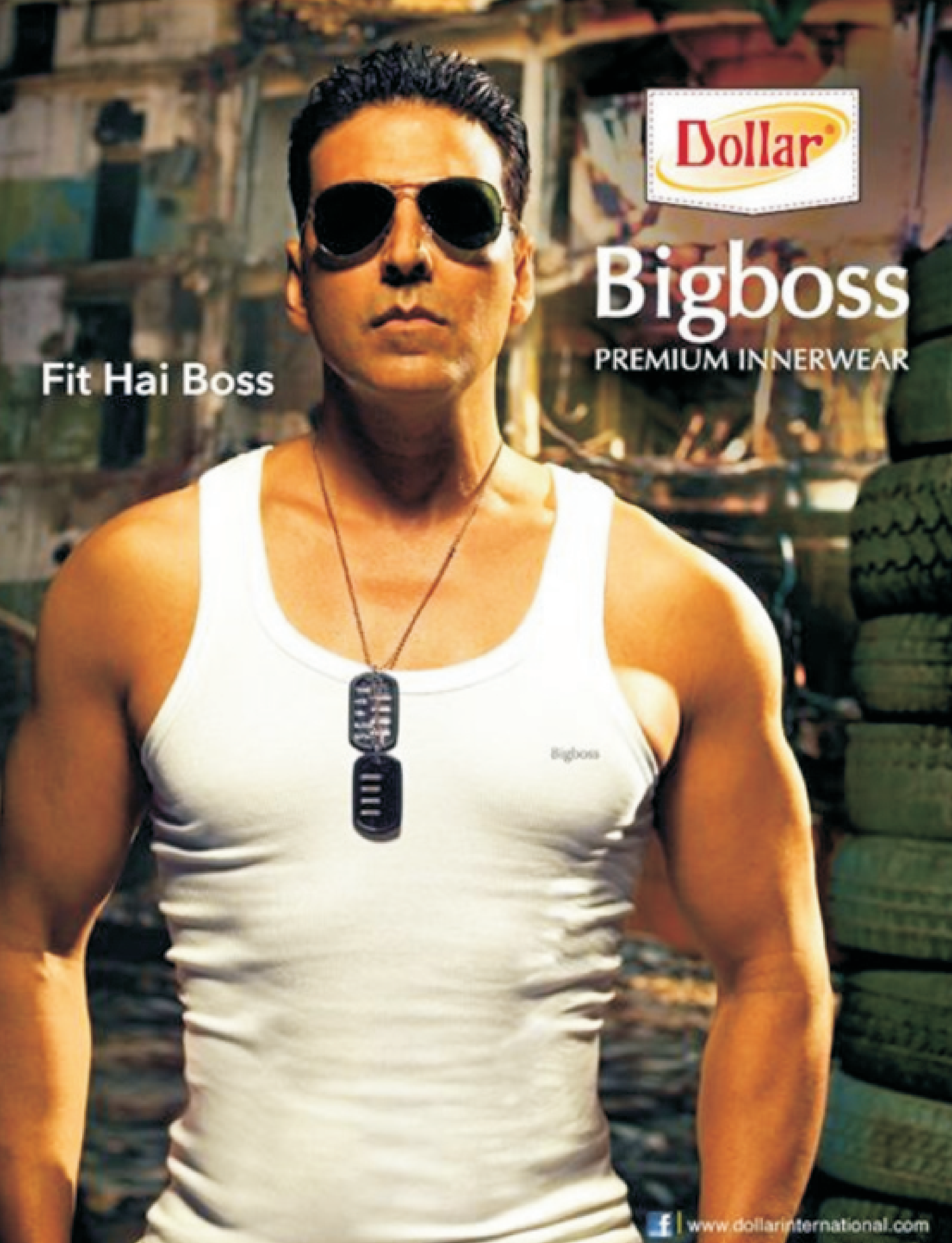
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 August-2013 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

राजा कैसा हो

महर्षि दयानन्द सरस्वती

वह सभेश राजा 'इन्द्र' अर्थात् विद्युत् के समान शीघ्र ऐश्वर्यकर्त्ता, 'वायु' के समान सब के प्राणवत् प्रिय और हृदय की बात जाननेहारा, 'यम' पक्षपातरहित-न्यायाधीश के समान वर्त्तनेवाला, 'सूर्य्य' के समान न्याय-धर्म-विद्या का प्रकाशक, अन्धकार अर्थात् अविद्या-अन्याय का निरोधक, 'अग्नि' के समान दुष्टों को भस्म करनेहारा, 'वरुण' अर्थात् बाँधने वाले के सदृश दुष्टों को अनेक प्रकार से बाँधनेवाला, 'चन्द्र' के तुल्य श्रेष्ठ पुरुषों को आनन्ददाता, 'धनाध्यक्ष' के समान कोशों का पूर्ण करनेवाला सभापति होवे।।१।। जो सूर्यवत् प्रतापी, सबके बाहर और भीतर मनों को अपने तेज से तपानेहारा, जिसको पृथिवी में करड़ी दृष्टि से देखने को कोई भी समर्थ न हो।।२।। और जो अपने प्रभाव' से अग्नि-वायु-सूर्य्य- सोम, धर्मप्रकाशक, धनवर्द्धक, दुष्टों का बन्धनकर्त्ता, बड़े ऐश्वर्यवाला होवे, वही 'सभाध्यक्ष' 'सभेश' होने के योग्य होवे।।३।।

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य